इग्नू
जन जन का
विश्वविद्यालय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

BECC-103
परिचयात्मक समष्टि अर्थशास्त्र

बीईसीसी–103

परिचयात्मक समष्टि अर्थशास्त्र

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

विशेषज्ञ समीति

प्रो० अतुल शर्मा (सेवानिवृत) पूर्व निदेशक भारतीय सांख्यिकी संस्थान, नई दिल्ली	प्रो० एम.एस. भट्ट (सेवानिवृत) जामिया मिलिया इस्लामिया नई दिल्ली	डॉ० अनुप चटर्जी (सेवानिवृत) ए.आर.एस.डी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ० सुरजीत दास सी.ई.एस.पी. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली	डॉ० मजुँला सिंह सेंट स्टीफंस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय नई दिल्ली	प्रो० बी. एस. प्रकाश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली
प्रो० कौस्तुभ बारिक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली		

पाठ्यक्रम संयोजक समीति

खण्ड / इकाई शीर्षक		इकाई लेखन एवं हिंदी अनुवादक
खण्ड 1	**समष्टि अर्थशास्त्र में चर्चित विषय और राष्ट्रीय आय लेखा**	
इकाई 1	**मुद्दे एवं संकल्पनाए**	प्रो० कौस्तुभ बारिक **हिंदी अनुवाद** – श्री कुमुद कुमार
इकाई 2	**चक्रीय प्रवाह एवं राष्ट्रीय आय लेखांकन**	श्री आर. सी. मलहान (प्रो० कौस्तुभ बारिक द्वारा संशोधित)
इकाई 3	**आर्थिक निष्पादन के माप**	डॉ० सरबजीत कौर, ज़ाकिर हुसैन कॉलेज(संध्या), दिल्ली विश्वविद्यालय। **हिंदी अनुवाद** – श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा
खण्ड 2	**आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा**	
इकाई 4	**मुद्रा के कार्य**	सुश्री प्रीति अग्रवाल, सहायक प्राध्यापक, कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज़, दिल्ली विश्वविद्यालय। **हिंदी अनुवाद** – श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा (इकाई 4 एवं 5) डॉ० तरूण माँझी (इकाई 6)
इकाई 5	**मुद्रा की मांग**	
इकाई 6	**मौद्रिक नीति**	
खण्ड 3	**मुद्रास्फीति**	
इकाई 7	**मुद्रास्फीति : संकल्पना, प्रकार एवं मापन**	डॉ० गुरलीन कौर, सहायक प्राध्यापक, श्री गुरू गोविंद सिंह कॉलेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय। **हिंदी अनुवाद–** डॉ० तरूण माँझी
इकाई 8	**मुद्रास्फीति के कारण और प्रभाव**	
खण्ड 4	**अल्पावधि में निर्दिष्ट अर्थव्यवस्था**	
इकाई 9	**पारम्परिक और केन्जियन सिद्धांत**	प्रो० कौस्तुभ बारिक, इग्नू एवं डॉ० निधि तेवतिया, सहायक प्राध्यापक, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय। **हिंदी अनुवाद** – डॉ० तरूण माँझी
इकाई 10	**आय निर्धारण का केंजीय प्रतिमान**	डॉ० निधि तेवतिया, सहायक प्राध्यापक, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय। **हिंदी अनुवाद** – डॉ० तरूण माँझी
इकाई 11	**केंजीय प्रतिमान में राजकोषीय नीति**	
खण्ड 5	**IS – LM वक्र विश्लेषण**	
इकाई 12	**वास्तविक क्षेत्र में सन्तुलन**	डॉ० निधि तेवतिया, सहायक प्राध्यापक, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय। **हिंदी अनुवाद–** डॉ० तरूण माँझी
इकाई 13	**मौद्रिक क्षेत्र में सन्तुलन**	
इकाई 14	**नवपारंपरिक संश्लेषण**	

पाठ्यक्रम संचालक: प्रो० कौस्तुभ बारिक **संपादक: प्रो० कौस्तुभ बारिक एवं डॉ० जगन्नाथ मलिक**

अनुवाद पुनः निरीक्षणः श्री भवानी शंकर बागला

सामग्री निर्माण

अप्रैल, 2020

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2020

ISBN:

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी(चक्र मुद्रण) द्वारा अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमाकें के विषय में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068 से अथवा इग्नू की आधिकारिक वेबसाइट : http://www.ignou.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की तरफ से निदेशक सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेज़र टाईप सेट: मुकेश कुमार यादव **आवरण सज्जा** : संदीप मैनी **मुद्रण:**

विषय–सूची

खंड 1	समष्टि अर्थशास्त्र में चर्चित विषय और राष्ट्रीय आय लेखा	पृष्ठ संख्या
इकाई 1	मुद्दे एवं संकल्पनाएँ	5
इकाई 2	चक्रीय प्रवाह एवं राष्ट्रीय आय लेखांकन	18
इकाई 3	आर्थिक निष्पादन के माप	39
खंड 2	आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा	
इकाई 4	मुद्रा के कार्य	55
इकाई 5	मुद्रा की मांग	64
इकाई 6	मौद्रिक नीति	75
खंड 3	मुद्रास्फीति	
इकाई 7	मुद्रास्फीति : संकल्पना, प्रकार एवं मापन	88
इकाई 8	मुद्रास्फीति के कारण और प्रभाव	95
खंड 4	अल्पावधि में निर्दिष्ट अर्थव्यवस्था	
इकाई 9	पारम्परिक और केंजीय सिद्धांत	106
इकाई 10	आय निर्धारण का केंजीय प्रतिमान	121
इकाई 11	केंजीय प्रतिमान में राजकोषीय नीति	133
खंड 5	IS – LM वक्र विश्लेषण	
इकाई 12	वास्तविक क्षेत्र में सन्तुलन	146
इकाई 13	मौद्रिक क्षेत्र में सन्तुलन	157
इकाई 14	नवपारंपरिक संश्लेषण	166
शब्दावली		174
कुछ उपयोगी पुस्तकें		182

पाठ्यक्रम परिचय

समष्टि अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की वह शाखा है जिसमें हम समूचे अर्थव्यवस्था व्यापी स्तर पर उत्पादन, आय, मुद्रा की आपूर्ति, बचत, निवेश, निर्यात एवं आयात जैसे समुच्चय चरों के क्रियाकलाप का अध्ययन करते हैं।

हमें, व्यष्टि अर्थशास्त्र से इतर, समष्टि अर्थशास्त्र पढ़ने की आवश्यकता इसलिए पड़ती है कि समुदायों का क्रियाकलाप घटकों के क्रियाकलाप से कहीं अधिक जटिल हो सकता है। आर्थिक संवृद्धि, मुद्रास्फीति, बेरोज़गारी, राजकीय ऋण एवं भुगतान शेष जैसे वृहत्तर विषयों का अध्ययन केवल समष्टि–अर्थशास्त्रीय स्तर पर ही किया जा सकता है। इस प्रकार, समष्टि अर्थशास्त्र हमें तीन पहलुओं से मदद करता है, यथा–(i) सामूहिक आर्थिक चरों के बीच संबंध को समझना, (ii) अर्थव्यवस्था के कार्य–निष्पादन का मूल्यांकन करना, और (iii) आर्थिक नीति का निरूपण।

जैसा कि पाठ्यक्रम का शीर्षक इंगित करता है, यह पाठ्यक्रम अपनी प्रकृति में परिचयात्मक है। कुछ जटिल विषयों का गहन विश्लेषण दो अनुवर्ती पाठ्यक्रमों में किया जाएगा, यथा – बीईसीसी 106: माध्यमिक समष्टि अर्थशास्त्र–I, और बीईसीसी 109: माध्यमिक समष्टि अर्थशास्त्र–II. प्रस्तुत पाठ्यक्रम पाँच खण्डों में विभाजित है।

खण्ड 1, जिसका शीर्षक है –**समष्टि अर्थशास्त्र में चर्चित विषय** और **राष्ट्रीय आय लेखा**, समष्टि अर्थशास्त्र के मूल मुद्दों से आरंभ हो समष्टि अर्थशास्त्र में बारंबार प्रयुक्त कुछ संकल्पनाओं को स्पष्ट करता है। प्रथम इकाई का उद्देश्य एक विहंगावलोकन प्रस्तुत कर शिक्षार्थियों के बीच कुछ जिज्ञासा उत्पन्न करना है। अनुवर्ती दो इकाइयों में, हम आय के वर्तुल प्रवाह एवं राष्ट्रीय आय के मापन संबंधी संकल्पनाओं का अध्ययन करेंगे।

खण्ड 2, किसी आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा, मुद्रा की परिभाषा एवं प्रकार्य प्रस्तुत कर मुद्रा की आपूर्ति का मापन करता है। तदंतर, इसमें मुद्रा के परिमाण सिद्धांत संबंधी प्राधार के में मुद्रा की आपूर्ति और कीमत स्तर के बीच संबंध पर चर्चा की गई है।

खण्ड 3 में, समष्टि अर्थशास्त्र में एक महत्वपूर्ण मुद्दें, अर्थात् **मुद्रास्फीति** पर चर्चा की गई है। यहां मुद्रास्फीति के प्रकारों एवं मापन से शुरुआत की गई है। अगली इकाई में, यह मुद्रास्फीति के कारणों एवं प्रभावों पर चर्चा हुई है।

खण्ड 4, अल्पावधि में निर्दिष्ट अर्थव्यवस्था का परंपरागत प्रतिमान एवं केंजीय मॉडल विषयक एक संक्षिप्त अवधारणा से आरंभ होता है। यह इन दोनों ही विचारधाराओं के बीच अंतर को स्पष्ट करता है। तदंतर, इसमें आय निर्धारण के केंजीय मॉडल व राजकोषीय नीति हेतु उसके निहितार्थों पर चर्चा की गई है।

खण्ड 5, का शीर्षक है **IS–LM वक्र विश्लेषण** यहां अर्थव्यवस्था के वास्तविक क्षेत्र व मौद्रिक क्षेत्र में संतुलन पर चर्चा की गई है। आगे इस खण्ड में, वास्तविक क्षेत्र में संतुलन पर आधारित IS वक्र, मौद्रिक क्षेत्र पर आधारित LM वक्र, तथा उक्त दोनों वक्रों की अंतर्क्रिया पर चर्चा की गई है।

इकाई 1 मुद्दे एवं संकल्पनाएँ *

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 विषय प्रवेश

1.2 समष्टि अर्थशास्त्र का अध्ययन क्यों करें ?

1.3 कुछ संकल्पनाएँ

1.3.1 स्टॉक और प्रवाह

1.3.2 अल्पावधि एवं दीर्घावधि

1.3.3 आर्थिक प्रतिमान

1.3.4 वृद्धि दर

1.4 उत्पादन संभाव्यता वक्र

1.5 आर्थिक संवृद्धि का महत्व

1.6 मुद्रास्फीति एवं बेरोज़गारी

1.7 व्यापार–चक्र

1.8 सार संक्षेप

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

1.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप इस स्थिति में होंगे कि

- व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र के बीच अंतर स्पष्ट कर सकें;
- समष्टि अर्थशास्त्र का महत्व समझ सकें;
- उत्पादन संभाव्यता वक्र की संकल्पना को स्पष्ट कर सकें; तथा
- मुद्रास्फीति, बेरोज़गारी एवं व्यापारचक्र जैसे मुद्दों का विहंगावलोकन प्रस्तुत कर सकें।

1.1 विषय प्रवेश

अब तक आप 'व्यष्टि अर्थशास्त्र' से परिचित रहे हैं, जिसमें परिवार एवं फर्म जैसे आर्थिक अभिकर्ताओं से संबद्ध विषय आते हैं। परिवारों के संदर्भ में, हमारा मुख्य विषय बजट संरोध के अधीन उपयोगिता अधिकतमीकरण होता है। इसी प्रकार, फर्मों के संदर्भ में, हमारा मुद्दा किसी संसाधन संरोध के अधीन लाभ अधिकतमीकरण (अथवा उसका द्वय, लागत न्यूनतमीकरण) होता है। विभिन्न आरेखों के माध्यम से आपने सीखा कि किस प्रकार परिवार विकल्प चुनते हैं।

किन संराधों का वे सामना करते हैं, किस प्रकार वे उपभोग के अपने इष्टतम स्तरों तक पहुँचते हैं, किसी भी परिवार के समक्ष इष्टतमीकरण समस्या को आरेखों के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है और गणितीय विधियों, खासकर रेखीय बीजगणित, द्वारा भी उसे हल किया जा सकता है।

* प्रो॰ कौस्तुभ बारिक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय।

इसी प्रकार का उपचार फर्मों के क्रियाकलाप संबंधी विश्लेषण हेतु किया जाता है, जहाँ फर्में आदानों की कीमतें एवं अपने उपलब्ध संसाधन ज्ञात होने पर अपना उत्पादन स्तर अधिकतम करती हैं। एक प्रश्न स्वाभाविक रूप से मस्तिष्क में उभरता है–'क्या यही अधिकतमीकरण समस्या देशों पर भी लागू होती है ?' इसका उत्तर है –'हाँ; देशों के समक्ष भी कुछ वस्तुपरक प्रकार्य होते हैं, और उनके सामने भी संरोध होते हैं। किसी देश के लिए वस्तुपरक प्रकार्य हो सकते हैं– सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में संवृद्धि का अधिकतमीकरण, घर–घर ग़रीबी का न्यूनतमीकरण, कोई स्थिर कीमत स्तर क़ायम रखना, व्यक्तियों के बीच आय के वितरण में असमानता घटाना, इत्यादि। इन मुद्दों का विश्लेषण करने के लिए हमें एक भिन्न प्राधार की आवश्यकता पड़ती है, जिसे 'समष्टि अर्थशास्त्र' कहा जाता है।

समष्टि अर्थशास्त्र ही अर्थशास्त्र की वह शाखा है जिसमें हम समग्र अर्थव्यवस्था के क्रियाकलाप का अध्ययन करते हैं। तदनुसार, इसमें समुचित चरों से क्रिया–व्यापार होता हैं, यथा– राष्ट्रीय आय, राष्ट्रीय उपभोग, राष्ट्रीय बचत, राष्ट्रीय निवेश, निर्यात, आयात, आदि। जैसा कि हम इस पाठ्यक्रम की परवर्ती इकाइयों में चर्चा करेंगे, इन चरों में से अनेक व्यष्टि–अर्थशास्त्रीय इकाइयों पर समुच्चयन मात्र नहीं होते।

1.2 समष्टि अर्थशास्त्र का अध्ययन क्यों करें ?

बीसवीं सदी के आरम्भ में, समष्टि अर्थशास्त्र जैसी अर्थशास्त्र की कोई शाखा नहीं थी। क्रुग्मैन एवं वैल्स के अनुसार, 'समष्टि अर्थशास्त्र' वर्ष 1933 में रैग्नर फ्रिश द्वारा गढ़ा गया। समष्टि अर्थशास्त्र में सैद्धान्तिक विकास वर्ष 1936 में जे.एम. केन्स (J M Keynes) कृत पुस्तक 'जनरल थ्योरी ऑफ़ इंटरेस्ट, इम्प्लॉयमेंट एंड मनी' के प्रकाशन के साथ ही सुस्पष्ट हुआ था।

जैसा कि हमने पहले भी कहा, समष्टि अर्थशास्त्र किसी भी अर्थव्यवस्था में सकल स्तरीय क्रियाकलाप के अध्ययन से संबंध रखता है। समष्टि अर्थशास्त्र की एक विशिष्ट शाखा की आवश्यकता इसलिए हुई कि वह बात जो वैयक्तिक इकाइयों के लिए लागू होती है, समग्र अर्थव्यवस्था के लिए संभवतः लागू न हो। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि कोई फर्म उत्पाद (माना, सीमेंट) के हेतु श्रमिक काम पर लगाती है।

वह वर्तमान वेतन दर पर अपनी आवश्यकतानुसार अनेक श्रमिक काम पर रख सकती है। किसी एकल फर्म द्वारा श्रमिक हेतु माँग में वृद्धि वेतन दर पर कोई प्रभाव नहीं डालती। तथापि, यदि फर्में श्रमिकों हेतु अपनी माँग बढ़ा देती हैं (माना, देश में आर्थिक उत्कर्ष एवं आशावाद के चलते) तो श्रम की 'कमी' और वेतनदर में वृद्धि दृष्टिगत होगी। इसके अलावा, देश में कार्य हेतु उपलब्ध श्रमिकों की संख्या सीमित होती है। अतः इस समय से आगे श्रमिक हेतु माँग वेतनदर ही बढ़ाएगी, न कि श्रम की आपूर्ति।

आइए, एक अन्य उदाहरण पर विचार करें– किसी परिवार द्वारा बचत और उसके देश की कुल बचत। जैसा कि आप सभी मुझसे सहमत होंगे, किसी व्यक्ति द्वारा बचत किया जाना एक सद्गुण है– हमें अपनी सारी आय खर्च नहीं कर देनी चाहिए बल्कि उसका कुछ हिस्सा भविष्य के लिए बचाना चाहिए।

वस्तुतः, यदि कोई व्यक्ति कुछ और अधिक बचाएगा तो उसे अपनी बचत पर ब्याज मिलेगा, और उसकी भावी आय का स्तर बढ़ेगा। वैसे इस विषय का एक अन्य पहलू भी है।

जब कभी कोई व्यक्ति अपनी आय का कुछ अंश बचाता है तो उसका उपभोग व्यय उसी मात्रा में घट जाता है। परिणामतः, वस्तु एवं सेवाओं हेतु उसकी माँग (माना, वस्त्रादि) जिस पर वह राशि खर्च की जाती, घट जाती है।

वह जिस व्यापारी से खरीदारी करता है, उसकी बिक्री में कमी आती है और फलस्वरूप, व्यापारी की आय (लाभ) घट जाती है। व्यापारी की आय में कमी के कारण उसके द्वारा वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च भी घट जाता है। यह सिलसिला चलता ही रहता है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जब हम उपभोग करते हैं तो हम वस्तु एवं सेवाओं हेतु माँग उत्पन्न करते हैं। वस्तु एवं सेवाओं हेतु यह माँग ही देश में उत्पादन गतिविधियों एवं रोज़गार सृजन की ओर अग्रसर करती है। यदि वस्तु सेवाओं हेतु कोई माँग ही न होगी तो देश को न उत्पादन होगा, न रोज़गार, और न ही आय का सृजन। इस प्रकार, यह देशहित में ही होगा कि घरेलू उपभोग में नियमित वृद्धि हो। उपर्युक्त संदर्भ में, यह प्रायः कहा जाता है कि बचत एक निजी गुण अवश्य है मगर यह एक सामाजिक दोष भी है! इसी को बचत का विरोधाभास कहा जाता है।

बहुधा, व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र के बीच अंतर वृक्षों एवं वन का दृष्टांत देकर स्पष्ट किया जाता है। वन में नाना प्रकार के वृक्ष होते हैं और उनमें प्रत्येक भिन्न हो सकता है। व्यष्टि अर्थशास्त्र किसी वन में वृक्षों का अध्ययन करने जैसा ही है, यथा– उनकी प्रजातियाँ, आकार, वृद्धि, आयु आदि। दूसरी ओर, समष्टि अर्थशास्त्र वन का अध्ययन करने जैसा है, यथा– उसका क्षेत्रफल, घनत्व, संघटन, एवं समग्र पारितंत्र। वृक्षों की खातिर हम वन की उपेक्षा नहीं कर सकते – समष्टिक पहलू व्यष्टिक पहलुओं की भाँति ही महत्वपूर्ण होते हैं। जहाँ व्यष्टि अर्थशास्त्र फर्मों एवं परिवारों के क्रियाकलाप का विश्लेषण करने में उपयोगी होता है, समष्टि अर्थशास्त्र नीति निरूपण एवं नीति–मूल्यांकन में सहायक सिद्ध होता है। आर्थिक संवृद्धि, मुद्रास्फीति, रोज़गार, राष्ट्रीय ऋण, भुगतान शेष, व्यापार चक्र आदि विषय किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। ये मुद्दे समष्टि अर्थशास्त्र का भाग होते हैं और इन्हें समष्टिक स्तर पर ही विश्लेषित किए जाने की आवश्यकता होती है।

बोध प्रश्न।

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र के बीच अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

2. स्पष्ट करें कि क्यों समष्टि अर्थशास्त्र महत्वपूर्ण है।

.....

.....

.....

.....

1.3 कुछ संकल्पनाएँ

यहाँ समष्टि अर्थशास्त्र में बार–बार प्रयुक्त कुछ संकल्पनाएँ प्रस्तुत की जा रही हैं।

1.3.1 स्टॉक और प्रवाह

किसी भी स्टॉक या भण्डार को किसी समयबिंदु पर मापा जाता है। उदाहरण के लिए, किसी भी देश के पूँजी स्टॉक में मशीनें, उपस्कर एवं भवन शामिल होते हैं। यह राष्ट्रीय धन–सम्पत्ति के उस भाग की ओर इशारा करता है जो पुनरुत्पादनीय (यथा, मानव–निर्मित) होता है; इसमें वे संसाधन आते हैं जो वस्तु एवं सेवाओं के उत्पादन में मदद करते हैं। पूँजी स्टॉक किसी दिनांक विशेष पर मापा जा सकता है। मुद्रा की आपूर्ति, श्रमबल और बाह्य ऋण स्टॉक के कुछ अन्य उदाहरण हैं।

प्रवाह किसी समय अंतराल के संदर्भ में मापे जाते हैं; तदनुसार, यह कोई दर होती है। व्यष्टि अर्थशास्त्र में, जैसा कि आपने देखा ही होगा, किसी भी फर्म का उत्पादन प्रति दिन अथवा प्रति माह आधार पर मापा जा सकता है। किसी समय आयाम के बिना उत्पादन अस्पष्ट ही रहेगा। इसी प्रकार, यदि मैं कहूँ कि मेरी आय रु. 10,000 है, यह अस्पष्ट ही होगा – यह प्रतिदिन है, प्रति सप्ताह, अथवा प्रति माह? समष्टि अर्थशास्त्र में भी यही तर्क लागू होता है। किसी भी देश का सकल घरेलू उत्पाद (GDP), उदाहरण के लिए, एक प्रवाह है। यह किसी वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तु एवं सेवाओं का मूल्य निरूपित करता है। आय, व्यय, बचत, निवेश, उपभोग, लाभ, ऋण आदि प्रवाहों के ही उदाहरण हैं।

संचय में परिवर्तन के माध्यम से कालान्तर में स्टॉक बढ़ जाता है। पूँजी भंडार में यह परिवर्तन निवेश से दर्शाया जाता है। गणितीय रूप से, स्टॉक को किसी समयावधि के संदर्भ में किसी प्रवाह चर के समाकलन के रूप में देखा जा सकता है।

1.3.2 अल्पावधि एवं दीर्घावधि

आपको व्यष्टि अर्थशास्त्र में अल्पावधि एवं दीर्घावधि संबंधी संकल्पनाओं का ज्ञान होगा – अल्पावधि में उत्पादन के कुछ कारक नियत होते हैं। किसी भी फर्म के लिए पूँजी एवं प्रौद्योगिकी अल्पावधि में नियत माने जाते हैं; उन्हें केवल दीर्घावधि में परिवर्तित किया जा सकता है। तदनुसार, दीर्घावधि में, किसी फर्म के सम्मुख कोई संरोध नहीं होते और सभी उत्पादन कारक परिवर्त्य होने पर वह अपने उत्पादन को अधिकतम कर सकती है।

समष्टि अर्थशास्त्र में, 'अल्पावधि' एवं 'दीर्घावधि' का प्रयोग व्यष्टि अर्थशास्त्र में उनके प्रयोग से कुछ भिन्न है। समष्टि अर्थशास्त्र में, हम कुछ चरों को नियमनिष्ठतः अल्पावधि में ही कुछ अनम्य मानकर चलते हैं, विशेषकर कीमत स्तर एवं वेतन दर। जैसा कि हम आगे की इकाइयों में देखेंगे, परम्परागत अर्थशास्त्रियों ने कीमतों एवं वेतन दरों को इस अर्थ में पूर्णतः सुनम्य माना कि वे तात्कालिक रूप से कुल माँग एवं कुल आपूर्ति में परिवर्तनों के प्रति समंजित हो जाती हैं। केन्स के अनुसार, ये चर अनम्य होते हैं और उन्हें अपने वांछित स्तर के प्रति समंजित होने में वक़्त लगता है। तदनुसार, कीमत एवं वेतन दीर्घावधि में ही अपने संतुलन स्तरों पर पहुँचते हैं, न कि अल्पावधि में। चूँकि नीति–निर्माता अल्पावधि से भी सरोकार रखते हैं, उन्हें नीति–निरूपण में कीमतों एवं वेतनों में अनम्यताओं को ध्यान में रखना ही पड़ता है।

अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के बीच पूँजी निवेश का प्रवाह भी समय लेता है; यह दीर्घावधि में ही संभव हो पाता है, न कि अल्पावधि में। देशों के बीच पूँजी का आदान–प्रदान एक अन्य चर है जो कि दीर्घावधि में ही अपने संतुलन स्तर के प्रति समंजित होता है। इस प्रकार के प्रवाहों का प्रभाव किसी समयावधि में ही विस्तृत होता है।

1.3.3 आर्थिक प्रतिमान

अर्थशास्त्र में हम प्रायः 'प्रतिमान' या 'मॉडल' शब्द का प्रयोग करते हैं। इसका अर्थ होता है – वास्तविकता की एक सरलीकृत व्याख्या। यह हमें आर्थिक व्यवहार को समझने, उसका विश्लेषण करने एवं उसका पूर्वानुमान करने में सहायक सिद्ध होता है। कोई भी आर्थिक प्रतिमान परिवार अथवा फर्म जैसे किसी व्यष्टि–अर्थशास्त्रीय अभिकारक के लिए हो सकता है। समष्टि अर्थशास्त्र में, यह समग्र अर्थव्यवस्था के क्रियाकलाप को निरूपित करता है।

समष्टि अर्थशास्त्र में, हम प्रासंगिक समष्टि–अर्थशास्त्रीय चरों (जैसे – आय, उत्पादन, व्यय, निवेश, बचत, निर्यात आदि) की पहचान करते हैं और उनके बीच संबंध स्थापित करते हैं। इन चरों के बीच संबंध आरेखों एवं गणितीय समीकरणों के माध्यम से व्यक्त किए जा सकते हैं। समष्टि–अर्थशास्त्रीय प्रतिमान गणितीय व्यंजकों के बिना भी हो सकते हैं, परंतु ये संभवतः परिशुद्ध या सटीक न हों।

कोई भी आर्थिक प्रतिमान कुछ अवधारणाओं पर आधारित होता है। ये अवधारणाएँ इसलिए अभीष्ट होती हैं ताकि सूक्ष्म विवरणों को अनदेखा कर अनिवार्य तत्वों का समावेश किया जा सके। चलिए, इस बात को एक उदाहरण के माध्यम से समझते हैं। किसी फर्म के उदाहरण में, हम यह मानकर चलते हैं कि उत्पादन के दो कारक होते हैं, यथा – पूँजी और श्रम। सभी प्रकार के श्रम को हम किसी सजातीय श्रेणी में ही रखते हैं – कार्यक्षेत्र में किसी प्रबंधक और किसी श्रमिक के बीच भेद नहीं करते ! इसी प्रकार, किसी अनधिमान वक्र का वर्णन करते समय हम परिवारों के प्रकार को अनदेखा करते हैं – किसी धनाढ्य परिवार का क्रियाकलाप किसी दरिद्र परिवार के क्रियाकलाप से भिन्न होगा; अथवा किसी ग्रामीण क्षेत्र के परिवार का क्रियाकलाप किसी शहरी क्षेत्र के परिवार के क्रियाकलाप से भिन्न होगा। हम इस प्रकार के ब्यौरों की उपेक्षा इसलिए करते हैं कि हमारा उद्देश्य कीमतों एवं आय में परिवर्तनों के प्रति परिवारों के क्रिया–व्यापार का विश्लेषण करना है। यदि हमारा उद्देश्य परिवारों के बीच उपभोग प्रतिमान में परिवर्तनों की पहचान करना हो तो हमें इस प्रकार की भिन्नताओं पर विचार करने के लिए एक भिन्न प्रतिमान की आवश्यकता होगी।

केंजीय मॉडल में, समष्टि अर्थशास्त्र से कोई भी उदाहरण लेने के लिए, हम कुल उपभोग, कुल निवेश, सरकारी व्यय, एवं निवल निर्यात जैसे समुच्चय सूचक चरों पर विचार करते हैं। हम समग्र अर्थव्यवस्था के लिए उत्पादन का संतुलन स्तर निर्धारित करते हैं। हम परिवारों एवं फर्मों के क्रियाकलाप को अनदेखा करते हैं। अनेक संवृद्धि प्रतिमान (जैसे – हैरड–डॉमर मॉडल अथवा सोलो मॉडल) यह मानकर चलते हैं कि अर्थव्यवस्था में मात्र एक ही क्षेत्र होता है – एक कुल उत्पादन फलन होता है, जो समस्त उत्पादन (यथा, कुल उत्पादन) और समस्त आदानों (यथा, कुल पूँजी एवं कुल श्रम) के बीच संबंध दर्शाता है। यह अवास्तविक लग सकता है परंतु इन संवृद्धि प्रतिमानों का उद्देश्य आर्थिक संवृद्धि, बचत अनुपात एवं जनसंख्या वृद्धि के लिए संतुलन दशाओं का विश्लेषण करना होता है। ये प्रतिमान ब्यौरों की उपेक्षा करते हैं परंतु निकाले गए वृहद निष्कर्ष नीति–निरूपण में सहायक होते हैं। 'क्या संवृद्धि दर विभिन्न देशों में भिन्न–भिन्न होती है ?' जैसे प्रश्नों का हल उक्त संवृद्धि प्रतिमानों के माध्यम से निकाला जा सकता है।

1.3.4 वृद्धि दर

हम अपने दिन–प्रतिदिन के क्रियाकलापों में वृद्धि दर का प्रयोग बारंबार करते हैं। मैं उस दर से सरोकार रखता हूँ जिस पर मेरा वेतन एक वर्ष में बढ़ा, वह दर जिस पर मुझे अपनी बचत पर ब्याज मिलता है, और महँगाई की वह दर जो मेरी क्रय–शक्ति को प्रभावित करती है।

एक वृहत्तर स्तर पर, मैं उस दर में रुचि दिखा सकता हूँ जिस पर भारत ही जनसंख्या बढ़ रही है अथवा जीडीपी बढ़ रही है। वृद्धि दर का आकलन सभी मामलों में एक–सा ही होता है। किसी चर की वार्षिक वृद्धि दर निम्नवत् आकलित की जाती है –

$$\text{वृद्धि दर} = \frac{\text{वर्तमान वर्ष में मान} - \text{पिछले वर्ष में मान}}{\text{पिछले वर्ष में मान}} \times 100$$

$$\text{जीडीपी की वृद्धि दर} = \frac{\text{वर्तमान वर्ष की जीडीपी} - \text{पिछले वर्ष की जीडीपी}}{\text{पिछले वर्ष की जीडीपी}} \times 100$$

आइए, सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर ज्ञात करें (इस पदबंध को हम अक्सर ही अखबारों में देखते हैं)। (प्रायः जीडीपी की वृद्धि के संदर्भ में हम संवृद्धि शब्द का प्रयोग करते हैं)।

$$\frac{190.10 - 170.95}{170.95} \times 100 = 11.20 \text{ प्रतिशत}$$

हम पाते हैं कि वित्त वर्ष 2018–19 में भारत का सकल घरेलू उत्पाद *वर्तमान कीमतों* पर रु. 190.10 लाख करोड़ रहा जबकि वर्ष 2017–18 में वर्तमान कीमतों पर यह रु. 170.95 लाख करोड़ रहा था। यदि हम इन मानों को उपर्युक्त समीकरण में रखें तो हमें प्राप्त होता है –

तदनुसार, वर्ष 2018–19 के लिए ऊपर परिकलित जीडीपी संवृद्धि दर होगी – 11.20 प्रतिशत! जैसा कि हम आधिकारिक आँकड़ों एवं समाचार–पत्रों में छपी रिपोर्टों में पाते हैं, वर्ष 2018–19 के दौरान भारत की जीडीपी संवृद्धि दर इतनी ऊँची नहीं रही; यह काफ़ी नीची रही। यहाँ हमने जो त्रुटि की है यह है कि हम जीडीपी का *वर्तमान मूल्य* मान रहे है जिनमें उत्पादन वृद्धि और कीमत वृद्धि शामिल होते हैं। हमारा उद्देश्य, बहरहाल, वित्त वर्ष 2018–19 के दौरान उत्पादन में वृद्धि का आकलन करना है। हमें कीमत वृद्धि के प्रभाव को निरपेक्ष रखने की आवश्यकता है – इसके लिए हम जीडीपी पर विचार *स्थिर कीमतों* के आधार पर करते हैं। भारत में स्थिर कीमतों पर जीडीपी, वर्ष 2019 के लिए, *आधार वर्ष* 2011–12 पर दर्शाई जाती है। भारत की जीडीपी दर वर्ष 2018–19 के लिए नियत मूल्यों में रु. 140.78 लाख करोड़ रही जो कि वर्ष 2017–18 में रु. 131.80 लाख करोड़ रही थी (लिया गया आधार वर्ष 2011–12 है; तदनुसार, ये मान वर्ष 2011–12 की कीमतों में हैं।) यदि हम इन मानों को उपर्युक्त समीकरण में रखें तो ज्ञात होता है कि वर्ष 2018–19 में वास्तविक, जीडीपी संवृद्धि दर निम्नवत् रही

$$\frac{140.78 - 131.80}{131.80} \times 100 = 6.81 \text{ प्रतिशत}$$

1.4 उत्पादन संभाव्यता वक्र

जैसा कि हमने ऊपर उल्लेख किया, उच्चतर आर्थिक संवृद्धि हासिल करना अधिकांश देशों की आर्थिक नीति के उद्देश्यों में एक होता है। किन्तु किसी देश की आर्थिक संवृद्धि एक सीमा से अधिक नहीं हो सकती।

यह सीमा भूमि, श्रम, पूँजी, कच्चा माल, ऊर्जा एवं तकनीकी जानकारी जैसे आदानों की उपलब्धता से ही सीमित होती है। यहाँ तक कि ऐसे देशों में, जहाँ प्राकृतिक संसाधन प्रचुरता से उपलब्ध हों, उनके दोहन हेतु वांछित वित्त संसाधन शायद कम हों। हर वर्ष हम सरकारी बजट पेश किए जाने के दौरान टीवी से चिपके बैठे रहते हैं; क्योंकि यह हमें सरकार की नीति एवं मुख्य क्षेत्रों के विषय में जानकारी देता है।

बजट ही दर्शाता है कि अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर कितनी–कितनी धन राशियां व्यय की जानी हैं। ऐसा इसलिए ज़रूरी है कि व्यय की विभिन्न मदों को आवंटित हो सकने वाले संसाधन सीमित होते हैं । आमतौर पर, हमने देखा है कि किसी भी देश के सामने अनेक संरोध होते हैं – विभिन्न क्रियाकलाप करने के लिए शायद पर्याप्त बजट न हो, हो सकता है कि कुछ सामरिक कच्चे माल की आपूर्ति में कमी हो, यह भी हो सकता है कि किसी परियोजना के श्रीगणेश एवं उसकी इतिश्री के बीच एक लम्बी विकसन अवधि हो, इत्यादि।

समष्टि अर्थशास्त्र में, हम एक उत्पादन संभाव्यता वक्र (Production Possibility Curve - PPC) के माध्यम से किसी देश के समक्ष संरोधों को प्रस्तुत करते हैं। सरलता की दृष्टि से, चलिए, मान लेते हैं कि उक्त देश मात्र दो ही जिन्सों (माना, एक पूँजीगत वस्तु और एक उपभोज्य वस्तु) का उत्पादन करता है। यहाँ उक्त वक्र (PPC) मूल बिंदु पर अवतल है (देखें चित्र 1.1) जो यह दर्शाता है कि एक जिन्स का अधिक उत्पादन तभी किया जा सकता है जबकि दूसरी जिन्स का उत्पादन घटा दिया जाए। इस वक्र (PPC) की सीमा जीडीपी का संभावित स्तर दर्शाती है, बशर्ते उपलब्ध संसाधनों की मात्रा ज्ञात हो। प्रस्तुत की जा सकने वाली वस्तुओं एवं सेवाओं के संयोजन भिन्न–भिन्न हो सकते हैं।

चित्र 1.1 में दर्शाए गए उत्पादन संभाव्यता वक्र पर हमने दो बिंदु (E और F) इंगित किए हैं। बिंदु E उपभोज्य वस्तु की अधिकता और पूँजीगत वस्तु की अल्पता दर्शाता है जबकि बिंदु F पूँजीगत वस्तु की अधिकता और उपभोज्य वस्तु की अल्पता दर्शाता है। हम देखते हैं कि इन दोनों वस्तुओं के बीच एक संतुलन प्रयास है। कोई देश उत्पादनार्थ वस्तुओं का कौन–सा संयोजन चुनता है यह उस देश के उद्देश्यों एवं जरूरतों पर निर्भर करता है।

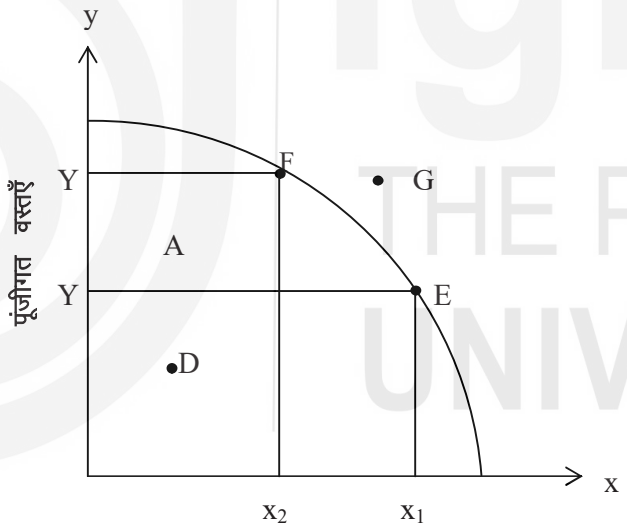

उपभोज्य वस्तुएँ

चित्र. 4.1: उत्पादकता संभांवना वक्र

ध्यान देने की बात है कि उक्त वक्र (PPC) किसी देश के संभावित सकल घरेलू उत्पाद को दर्शाता है। उस देश में वास्तव में जो उत्पादन किया जा रहा है, भिन्न हो सकता है। उदाहरण के लिए, जब उत्पादन उक्त वक्र (PPC)पर होता है (देखें चित्र 1.1 में बिंदु E व F) तो सभी संसाधनों का दक्षता पूर्वक उपयोग किया जाता है। यदि उत्पादन इस वक्र (PPC) के अंदर की ओर किसी बिंदु पर होता है (देखें बिंदु A व D) तो कुछ संसाधन अल्प–प्रयुक्त ही रहते हैं। इस वक्र के बाहर कोई भी बिंदु, जैसे चित्र 1.1 में G, लभ्य नहीं होता। यदि देश इस वक्र के अंदर किसी बिंदु पर कार्यरत हो तो एक 'उत्पादन अंतराल' निम्नवत् दृष्टिगत होता है–

उत्पादन अंतराल (output gap) = (संभावित उत्पादन – वास्तविक उत्पादन)

कालांतर में संभावित जीडीपी दो विधियों से बढ़ सकती है – प्रौद्योगिकी प्रगति और अपेक्षाकृत अधिक संसाधनों का संचय। ऐसे मामलों में, उक्त वक्र (PPC)दाएँ खिसक जाता है। इसके यथेष्ट रूप से बाहर की ओर खिसक जाने की स्थिति में, बिंदु G (जो कि पहले लभ्य नहीं था) अब प्राप्त किया जा सकता है। जब किसी देश का यह वक्र (PPC) बाहर की ओर खिसकता है तो देश में आर्थिक संवृद्धि दिखाई पड़ती है।

बोध प्रश्न 2

1. निम्नलिखित संकल्पनाओं के बीच अंतर स्पष्ट करें –
   (i) स्टॉक और प्रवाह (ii) अल्पावधि और दीर्घावधि

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

2. एक आरेख के माध्यम से उत्पादन संभाव्यता वक्र की संकल्पना समझाइए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

1.5 आर्थिक संवृद्धि का महत्व

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया, किसी भी अर्थव्यवस्था की संवृद्धि दर उसके वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर से दर्शाई जाती है। आपने भी देखा होगा कि विभिन्न देशों की संवृद्धि दरें भिन्न–भिन्न होती हैं – जहाँ चीन जैसे देशों में दशकों तक 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष की संवृद्धि दर देखी गई है, वहीं अनेक अफ्रीकी देश ऐसे भी हैं जहाँ वृद्धि दर नगण्य रही है। विश्वयुद्ध पश्चात् अवधि में हुई जापान की अत्युच्य आर्थिक संवृद्धि किसी चमत्कार से कम न थी। पिछले 20 वर्षों में, बहरहाल, जापान में गंभीर आर्थिक संकट ही रहा है – अत्यधिक घट–बढ़ के साथ आर्थिक संवृद्धि, ह्रासमान जनसंख्या विस्तार, और भारी राजकीय ऋण। बीसवीं सदी के आरंभ में अर्जेन्टीना, (एक लैटिन अमेरिकी देश) ऑस्ट्रेलिया, कनाडा एवं फ्रांस जैसे अनेक देशों की अपेक्षा कहीं अधिक सम्पन्न था।

अर्जेन्टीना विस्तृत प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न है, ख़ासकर कृषि एवं ऊर्जा के क्षेत्रों में। वर्ष 1913 में अर्जेन्टीना की प्रति व्यक्ति आय $3797 थी जबकि यह आय $3462 फ्रांस में और जर्मनी में $3134 थी। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के अनुसार, वर्ष 2019 में, अर्जेन्टीना की प्रतिव्यक्ति आय 9887 रही जबकि फ्रांस व जर्मनी की क्रमशः $41,760 व

$46,563 रही। यह दर्शाता है कि पिछली शताब्दी में अर्जेन्टीना के मुक़ाबले फ्रांस व जर्मनी की प्रति व्यक्ति आय काफ़ी तेज़ी से बढ़ी।

अर्थशास्त्री अर्जेन्टीना की संवृद्धि दर में इस आपेक्षिक गतिहीनता का कारण अनेक कारकों को मानते हैं, जिनमें शामिल हैं – राजनीतिक अस्थिरता, प्रौद्योगिकीय प्रगति का अभाव, आयात–प्रतिस्थापन (निर्यात–प्रोत्साहन की बजाय) की विकास रणनीति ही अपनाए रखना, और उच्च मुद्रास्फीति। एक अन्य उदाहरण में, हम विश्व की दो प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं – चीन और भारत की प्रति व्यक्ति आय की तुलना करेंगे। वर्ष 1990 तक भारत और चीन की प्रति व्यक्ति जीडीपी लगभग एक समान स्तर पर ही थी (अमेरिकी डॉलर के पदों में, वर्ष 1990 में भारत की प्रति व्यक्ति जीडीपी $367 रही जबकि चीन की $318 रही। परवर्ती अवधि में, बहरहाल, चीन की संवृद्धि दर भारत की संवृद्धि दर से काफ़ी अधिक रही। वर्ष 2018 में, भारत की प्रति व्यक्ति जीडीपी चीन की प्रति व्यक्ति जीडीपी की लगभग 20 प्रतिशत रही (अमेरिकी डॉलर के पदों में, वर्ष 2018 में, प्रति व्यक्ति जीडीपी चीन की $9770 के मुक़ाबले भारत की $2010 रही)। यदि हम वर्ष 2018 के लिए क्रय–शक्ति सममूल्यता (PPP) के पदों में भारत और चीन की प्रति व्यक्ति आय की तुलना करें तो भारत की प्रति व्यक्ति जीडीपी ($7762) चीन को ($18,236) मुकाबले लगभग 43 प्रतिशत रही। हम समष्टि–अर्थशास्त्रीय विश्लेषण के द्वारा इस प्रकार की तुलना विभिन्न देशों के बीच कर संवृद्धि में ऐसी भिन्नताओं के लिए उत्तरदायी कारणों का विश्लेषण कर सकते हैं।

आप को '70 का नियम' तो ज्ञात ही होगा। यह उन वर्षों की संख्या दर्शाता है जो आपकी धनराशी को दुगना करने में लेता है। यदि आप किसी बैंक में रु. 1000 बचाते हैं और ब्याज दर 1 प्रतिशत प्रतिवर्ष है तो आपकी बचत को दुगना होने, अर्थात् रु. 2000 होने, में 70 वर्ष लगेंगे। यदि ब्याज दर 7 प्रतिशत हो तो इसे दुगना होने में मात्र 10 वर्ष लगेंगे। इसका सूत्र है –

$$\text{धनराशि दुगना होने हेतु वर्षों की संख्या} = \frac{70}{\text{ब्याज दर}}$$

यही नियम किसी देश के सकल घरेलू उत्पाद और प्रति व्यक्ति जीडीपी पर लागू होता है। किसी देश की प्रति व्यक्ति जीडीपी 5 प्रतिशत की दर से बढ़ रही हो तो उसको अपनी प्रति व्यक्ति जीडीपी को दुगना करने में 14 वर्ष लगेंगे (यथा, $\frac{70}{5} = 14$)। तदनुसार, यदि यही वृद्धि 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से हो तो वह 7 वर्षों में दुगनी हो जाएगी। चलिए, ऐसे दो देशों, A और B के बीच तुलना करते हैं जिनकी प्रति व्यक्ति जीडीपी, माना रु. 1000, एक समान है। मान लेते हैं कि देश A की प्रति व्यक्ति जीडीपी 5 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से बढ़ रही है जबकि देश की यही दर 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष है। यदि हम 28 वर्ष की कोई अवधि लेकर चलें तो इस अवधि पश्चात् देश A की प्रति व्यक्ति जीडीपी रु. 4000 होगी। इन्हीं 28 वर्षों में देश B की प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (GDP) रु. 8000 हो जाएगी ! अब आप कल्पना कर सकते हैं कि दीर्घावधि में कोई उच्चतर वृद्धि दर प्रति व्यक्ति GDP में कितना अंतर ला सकती है।

आर्थिक संवृद्धि इसलिए महत्वपूर्ण होती है कि यह लोगों की आय को वृद्धि की ओर अग्रसर करती है, जो कि बदले में उच्चतर उपभोग एवं बचत की ओर ले जाती है। दूसरे, उच्चतर आय एवं निवेश की वजह से सरकार के कर राजस्व में वृद्धि होती है। तीसरे, जीडीपी में वृद्धि बेरोज़गारी में कमी की ओर अग्रसर करती है क्योंकि अपेक्षाकृत अधिक

श्रमिकों को रोज़गार मिलता है। चौथे, बढ़ा सरकारी ख़र्च उन्नत राजकीय सेवाओं की ओर प्रवृत्त करता है।

ध्यान देने की बात है कि आर्थिक विकास आर्थिक संवृद्धि से भिन्न होता है। जहाँ आर्थिक संवृद्धि जीडीपी में वृद्धि दर्शाती है, वहीं आर्थिक विकास एक काफ़ी वृहद संकल्पना है। आर्थिक विकास में स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली, पेयजल, ग़रीबी की अविद्यमानता, बुनियादी सुविधाओं में सुधार आदि शामिल होते हैं। इस प्रकार का सुधार तभी संभव होगा जब आर्थिक संवृद्धि होगी।

1.6 मुद्रास्फीति और बेरोज़गारी

समाचार–पत्रों में और अपने दैनिक वार्तालाप में हम प्रायः 'मुद्रास्फीति' और 'बेरोज़गारी' शब्दों से दो–चार होते हैं। इन दो चरों में से किसी एक में भी वृद्धि आम जीवन में कंगाली और नीति–निर्माताओं के लिए बड़ी चिंता का विषय बनती है। मुद्रास्फीति को इन शब्दों में परिभाषित किया जाता है – 'कीमतों के सामान्य स्तर में निरंतर वृद्धि' अर्थात् महँगाई बढ़ना। यदि आज कीमत–स्तर बढ़ जाता है परंतु कल गिर जाता है तो इसको महँगाई बढ़ना नहीं कहा जाएगा, बल्कि इसे कीमतों में अल्पावधि उच्चावचन ही कहा जाएगा। पदबंध 'सामान्य कीमत स्तर' भी महत्वपूर्ण होता है क्योंकि कालांतर में, कुछ जिन्सों के दाम बढ़ सकते हैं जबकि कुछ अन्य के वस्तुतः गिर सकते हैं। परिणामतः, कुल मिलाकर, कीमतों का औसत स्तर रह सकता है अथवा नीचे भी जा सकता है। इसी प्रकार, यदि किसी ऐसी जिन्सों के समूह की कीमत जिनमें अर्थव्यवस्था के उत्पादन के कुल मूल्य का एक छोटा–सा अंश मात्र ही शामिल हो, बढ़ जाता है तो पुनः इसे मुद्रास्फीति नहीं माना जाएगा। दूसरे शब्दों में, पूरा अर्थ यह है कि ऐसी जिन्सों की कीमतों में वृद्धि का प्रभाव सभी जिन्सों को औसत कीमत स्तर को प्रभावित कर पाने के लिए बहुत ही कम है। तदनुसार, हम पाते हैं कि मुद्रास्फीति एक वृहद–स्तरीय घटना है और किसी जिन्स विशेष अथवा, किसी लधु जिन्स–समूह की कीमत में वृद्धि से सम्बद्ध नहीं है। जब महँगाई फैलती है तो लोगों की क्रय–शक्ति घट जाती है। मुद्रास्फीति समाज के विभिन्न वर्गों पर पृथक–पृथक प्रभाव डालती है। महँगाई के दौर में, जहाँ वेतनभोगी समूहों (तयशुदा मासिक आय पाने वाले लोगों) पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, उत्पादनकर्ता एवं व्यापारी वर्ग लाभ कमा रहा होता है। अत्युच्य मुद्रास्फीति (जिसे प्रायः हाइपर–इन्फ़्लेशन कहा जाता है) हर व्यक्ति का बजट बिगाड़ देती है।

बेरोज़गारी एक अन्य सामाजिक बुराई है। समष्टि अर्थशास्त्र में, जब हम 'बेरोजगारी' शब्द का उल्लेख करते हैं तो हमारा अभिप्रायः अनैच्छिक बेकारी से होता है अर्थात् व्यक्ति काम ढूँढ़ रहा है मगर उसे काम नहीं मिलता। वह व्यक्ति जो कोई काम नहीं ढूँढ़ रहा, उसे बेरोज़गार नहीं कहा जा सकता। ऐसे भी दौर होते हैं जब हम एक नौकरी छोड़कर दूसरी तलाशते हैं। किसी भी समय–बिंदु पर, ऐसी कालावधियाँ होती हैं जब बेरोज़गारी दर बहुत ऊँची होती है। बेरोज़गारी दो आधारों पर बुरी होती है, यथा – (i) इसके परिणामस्वरूप बेरोज़गारों के लिए आय हानि ही सामने आती है, और (ii) अमूल्य मानव संसाधनों की बर्बादी होती है।

आमतौर पर देखा गया है कि मुद्रास्फीति और बेरोज़गारी के बीच एक संतुलन–प्रयास होता है, कम से कम किसी अल्पावधि के लिए ही।

यदि सरकार बेराज़गारी की दर घटाना चाहती है तो अर्थव्यवस्था को मुद्रास्फीति की उच्चतर दर का ही सामना करना ही होता है।

इसी प्रकार, यदि सरकार महँगाई पर क़ाबू पाना चाहती है तो बेरोज़गारी की दर बढ़ सकती है। मुद्रास्फीति और बेराज़गारी के बीच संबंध पर व्यापक बहस होती रही है; और इन दोनों पर अर्थशास्त्रियों के बीच काफ़ी मतभेद भी देखने में आता है।

1.7 व्यापार–चक्र

किसी भी देश में आर्थिक क्रियाकलापों में उतार–चढ़ाव आते ही रहते हैं – जहाँ कुछ अवधियों में संवृद्धि दर ऊँची होती है, वहीं कुछ अन्य अवधियों में यह गिर जाती है। यह आमतौर पर देखा जाता है कि ऊँची और नीची संवृद्धि दरों के बारी–बारी से अनेक दौर होते हैं। संवृद्धि के ऐसे ही दौर 'व्यापार चक्र' कहलाते हैं।

किसी भी व्यापार चक्र के चार चरण होते हैं, यथा – विस्तार, मंदी, अवसाद एवं समुत्थान। साथ ही, किसी भी व्यापार चक्र की अवधि दो वर्ष से लेकर बारह वर्ष की हो सकती है। व्यापार चक्रों समकालिकता होती है। अर्थव्यवस्था के अधिकांश उद्योगों अथवा क्षेत्रों में अवसाद अथवा संकुचन सहकालिक रुप से होता है। मंदी एक उद्योग से दूसरे उद्योग में चली जाती है और यह सिलसिला समग्र अर्थव्यवस्था के मंदी के चंगुल में आ जाने तक चलता ही रहता है। इसी प्रकार, समृद्धि उद्योगों अथवा क्षेत्रों के बीच निवेश–उत्पादन संबंधों वाले विभिन्न अनुबंधनों के माध्यम से सर्वत्र फैलती है। व्यापार चक्रों को अन्य उतार–चढ़ावों से भिन्न पहचाना जा सकता है क्योंकि ये बहुधा *वृहत्तर, दीर्घतर* और *व्यापक रुप से विसरित* होते हैं।

व्यापार चक्रों में हम पाते हैं कि अनेक अन्तरावद्ध चर एक साथ चलते हैं। उतार–चढ़ाव उत्पादन स्तर के साथ–साथ रोज़गार, निवेश, उपभोग, ब्याज दर, कीमत स्तर आदि में भी सहकालिकता दिखाई पड़ती है। मंदी अथवा विस्तार का तत्काल प्रभाव वस्तुओं की माल–सूचियों पर पड़ता है। जब मंदी आती है तो इन विस्तृत सूचियों में संचय वांछित स्तर से कहीं ऊपर नज़र आने लगता है। प्रत्युत्तर में, उत्पादनकर्ता वर्ग वस्तुओं के उत्पादन स्तर को घटा देता है। इसके विपरीत, जब समुत्थान शुरु होता है तो कुल माँग बढ़ती है और माल–सूचियाँ वांछित स्तर से नीचे चली जाती हैं। इससे व्यापार–गृह माल के लिए पहले से अधिक ऑर्डर करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं; परिणामतः उत्पादन बढ़ता है और निवेश प्रोत्साहित होता है। व्यापार चक्र अपनी प्रकृति में अंतर्राष्ट्रीय होता हैं।

इसका अर्थ है कि एक देश में यह आरंभ होने के बाद अपने संक्रमण प्रभाव के कारण अन्य देशों में भी फैल जाता है। उदाहरणार्थ, किसी एक देश के वित्त बाज़ारों में व्याप्त गिरावट तेज़ी–से फैलकर अन्य देशों में भी दिखाई पड़ने लगती है क्योंकि वित्त बाज़ार पूँजी प्रवाहों के माध्यम से विश्व व्यापी रूप से जुड़े होते हैं।

इसके अलावा, किसी एक देश, माना अमेरिका, में छाई मंदी अन्य देशों में भी फैल सकती है क्योंकि अमेरिका द्वारा किया जाने वाला आयात घट जाएगा। अमेरिका को निर्यात करने वाले प्रमुख देशों के निर्यात में कमी आएगी और वहाँ मंदी दिखाई देगी।

मंदी (1929–34) का प्रतिकूल प्रभाव इतिहास में बखूबी दर्ज़ है। इसके परिणामस्वरूप अनेक देशों में समाज के एक बड़े तबके में व्यापक बेरोज़गारी, ग़रीबी, और कंगाली दिखाई दी थी।

हाल के वर्षों में, वर्ष 2007–09 के दौरान (इसे प्रायः महामंदी की संज्ञा दी जाती है) अधिकांश देशों में गंभीर मंदी का दौर दिखाई दिया।

आज विश्व वर्ष 2007–09 के आर्थिक संकट के प्रतिकूल प्रभाव से काफ़ी हद तक उबर चुका है, परंतु इसकी स्मृति अभी ताज़ा ही है।

बोध प्रश्न 3

1. किसी देश के लिए आर्थिक संवृद्धि क्यों आवश्यक है ? स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2. आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास के बीच अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3. व्यापार चक्र की संकल्पना पर प्रकाश डालें।

.....

.....

.....

.....

.....

1.8 सार संक्षेप

इस इकाई में हमने व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र के बीच अंतर स्पष्ट किया। समष्टि अर्थशास्त्र अर्थव्यवस्था के वृहत्तर एवं समूहपरक पहलुओं पर विचार करता है। यह नीति–निरूपण एवं नीति–मूल्यांकन में सहायक सिद्ध होता है।

हमने चर्चा की कि वृद्धि दर किस प्रकार आकलित की जाए। इसके अलावा, हमने आर्थिक संवृद्धि के महत्व को भी बताया। स्टॉक एवं प्रवाह तथा अल्पावधि एवं दीर्घावधि जैसी संकल्पनाओं के बीच अंतर स्पष्ट करना भी इस इकाई का विषय रहा। साथ ही,

मुद्रास्फीति, बेराज़गारी एवं व्यापार चक्र जैसी कुछ संकल्पनाओं पर भी संक्षिप्त चर्चा की गई, जो कि हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में अक्सर सामने आती हैं।

1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1. खण्ड 1.2 पढ़ें और उत्तर दें।
2. खण्ड 1.2 पढ़ें और उत्तर दें।

बोध प्रश्न 2

1. (i) स्टॉक को किसी समय–बिंदु पर मापा जाता है जबकि प्रवाहों को समय की प्रति इकाई मापा जाता है।

   (ii) अल्पावधि में कुछ कारक नियत होते हैं जबकि दीर्घावधि में सभी कारक परिवर्तनशील होते हैं। विस्तृत वर्णन के लिए खण्ड 1.2 पढ़ें।
2. उत्पादन सम्भावता वक्र किसी अर्थव्यवस्था का संभावित उत्पादन दर्शाता है। अपने उत्तर के लिए चित्र 1.1 की व्याख्या करें।

बोध प्रश्न 3

1. खण्ड 1.5 पढ़ें और उत्तर दें।
2. आर्थिक संवृद्धि का अर्थ होता है – किसी देश की जीडीपी में वृद्धि। आर्थिक विकास एक बहुआयामी संकल्पना है। प्रति व्यक्ति आय के अतिरिक्त, इसमें विभिन्न सामाजिक–आर्थिक चर भी शामिल होते हैं। विस्तृत वर्णन के लिए खण्ड 1.5 पढ़ें।
3. खण्ड 1.7 पढ़ें और उत्तर दें।

इकाई 2 चक्रीय प्रवाह एवं राष्ट्रीय आय लेखांकन*

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 चक्रीय प्रवाह की अवधारणा

- 2.2.1 मुद्रा प्रवाह और वास्तविक प्रवाह में अंतर
- 2.2.2 उद्यमों तथा गृहस्थों के बीच प्रवाह
- 2.2.3 उद्यमों, गृहस्थों तथा पूँजी क्षेत्रों के बीच प्रवाह
- 2.2.4 उद्यमों, गृहस्थों सरकारी क्षेत्रों के बीच प्रवाह
- 2.2.5 एक अनावृत अर्थव्यवस्था में प्रवाह

2.3 चक्रीय प्रवाह तथा राष्ट्रीय आय

- 2.3.1 वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय
- 2.3.2 साधन आयों के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय
- 2.3.3 अंतिम व्ययों के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय
- 2.3.4 उत्पादन, आय तथा व्यय के प्रवाहों के रूप में राष्ट्रीय आय

2.4 राष्ट्रीय आय समूह

- 2.4.1 राष्ट्रीय आय तथा विभिन्न संबंधित अवधारणाएँ
- 2.4.2 विभिन्न समष्टिगत आर्थिक समूहों के बीच अंतसंबंध

2.5 सार संक्षेप

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप समझ पाएँगे

- चक्रीय प्रवाह से क्या अभिप्राय है;
- मुद्रा प्रवाहों और वास्तविक प्रवाहों में अंतर;
- विभिन्न समष्टिगत आर्थिक समुच्च्यों के बीच संबंध।

2.1 प्रस्तावना

यह इकाई चक्रीय प्रवाह एवं राष्ट्रीय आय से संबंधित है। एक अर्थव्यवस्था विभिन्न आर्थिक एजेंटों जैसे उत्पादक, उपभोक्ता, सरकार, पूँजी तथा शेष–विश्व की मदद से कार्य करती है। ये आर्थिक एजेंट उत्पादन, आय–सृजन, पूँजी–निर्माण तथा शेष–विश्व के साथ लेन–देन जैसी विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करते हैं। इन आर्थिक गतिविधियों को करते हुए विभिन्न आर्थिक एजेंटों के बीच प्रवाह होते हैं। इन प्रवाहों से हम राष्ट्रीय आय, सकल घरेलू उत्पाद इत्यादि प्राप्त कर सकते हैं।

* श्री आर. सी. मलहान (प्रो० कौस्तुभ बारिक द्वारा संशोधित)

राष्ट्रीय आय, रोजगार कीमत स्तर इत्यादि के निर्धारण के लिए समष्टिगत आर्थिक सिद्धांतों को समझने के लिए इन चक्रीय आय तथा उसके अन्य संबंधित आर्थिक समुच्च्यों को समझना आवश्यक है।

2.2 चक्रीय प्रवाह की अवधारणा

चक्रीय प्रवाह की अवधारणा एक आर्थिक इकाई से दूसरी आर्थिक इकाई के बीच वास्तविक लेन–देन या मौद्रिक लेन–देन से संबंधित है। यह प्रवाह एक तरफा नहीं है बल्कि दो तरफा है। इसलिए इसे चक्रीय प्रवाह कहा जाता है। मान लिजिए कि व्यक्ति ''क'' व्यक्ति ''ख'' को गेहूँ देता हैं, और बदले में व्यक्ति ''ख'' व्यक्ति ''क'' को चावल देता है तो इस लेन–देन को चक्रीय प्रवाह कहा जाएगा। इस बात को निम्न तरीके से दिखाया जा सकता है।

चित्रः 2.1

तीर की दिशा दिखाती है कि कौन प्राप्त कर रहा है। उदाहरण के लिए जब ''ख'' व्यक्ति, ''क'' व्यक्ति से गेहूँ प्राप्त करता है तो तीर का निशान व्यक्ति ''ख'' की तरफ होता है। उसी तरह जब व्यक्ति ''क'' व्यक्ति ''ख'' से चावल प्राप्त करता है तो तीर का निशान व्यक्ति ''क'' की तरफ होता है। उपरोक्त उदाहरण में चूँकि वस्तुओं का विनिमय हो रहा है इसलिए इन प्रवाहों को वास्तविक प्रवाह कहा जाएगा। यदि वस्तुओं के स्थान पर मुद्रा का विनिमय होता है तो इसके वास्तविक प्रवाह के साथ–साथ मौद्रिक–प्रवाह भी आ जाते हैं। मान लीजिए कि उपरोक्त उदाहरण में व्यक्ति ''ख'' व्यक्ति ''क'' से गेहूँ प्राप्त करता है और बदले में ''ख'' व्यक्ति ''क'' को मुद्रा देता है तो बाद वाला प्रवाह मुद्रा–प्रवाह है। उसी प्रकार से यदि व्यक्ति ''क'' व्यक्ति ''ख'' को चावल की खरीद के बदले मुद्रा प्रदान करता है तो भी यह बाद वाला प्रवाह मुद्रा–प्रवाह है। इन मुद्रा प्रवाहों को निम्न प्रकार से दिखाया जा सकता है।

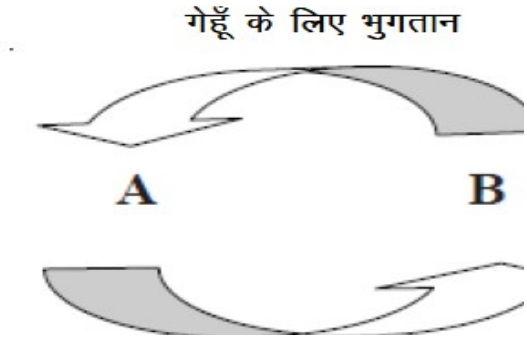

चित्रः 2.2

यदि हम 2.1 एवं चित्र 2.2 की तुलना करें तो पाते है कि वास्तविक प्रवाह सीधी दिशा में यानि बाई से दाईं ओर चलता है। दूसरी तरफ, मौद्रिक प्रवाह उल्टी दिशा यानी दाईं से बाईं ओर चलता है।

2.2.1 मुद्रा प्रवाह और वास्तविक प्रवाह में अंतर

मौद्रिक एवं वास्तविक प्रवाहों के अंतर को स्पष्ट रूप से समझना होगा। वास्तविक प्रवाह से अभिप्राय वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह से है। वास्तविक प्रवाहों का मापन कठिन होता है क्योंकि अलग–अलग वस्तुओं और सेवाओं को अलग–अलग इकाइयों में व्यक्त करते है जैसे किलोग्राम, लीटर आदि। ऐसी इकाईयों को जोड़ नहीं सकते। यही कारण है कि हम वास्तविक प्रवाहों को मौद्रिक प्रवाहों में व्यक्त करके उनका मापन करते हैं। जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि मौद्रिक प्रवाह से अभिप्राय मुद्रा के लेन–देन से है। ''क'', ''ख'' को कोई वस्तु बेचता है तो यह एक वास्तविक प्रवाह है। इसके बदले में ''ख'', ''क'' को जो भुगतान करता है, वह मौद्रिक प्रवाह है। इसी प्रकार यदि ''ख'', ''क'' को श्रम सेवाएँ देता है तो यह एक वास्तविक प्रवाह होगा। ''क'' इन साधन सेवाओं के बदले जो कुछ भुगतान करता है वह मौद्रिक प्रवाह है।

मौद्रिक तथा वास्तविक प्रवाहों के बीच अंतर एवं उनके आपसी संबंधों को निम्न चित्र की सहायता से समझाया जा सकता है। इसमें ''क'' को एक उत्पादक तथा ''ख'' को एक गृहस्थ के रूप में दर्शाया गया है:

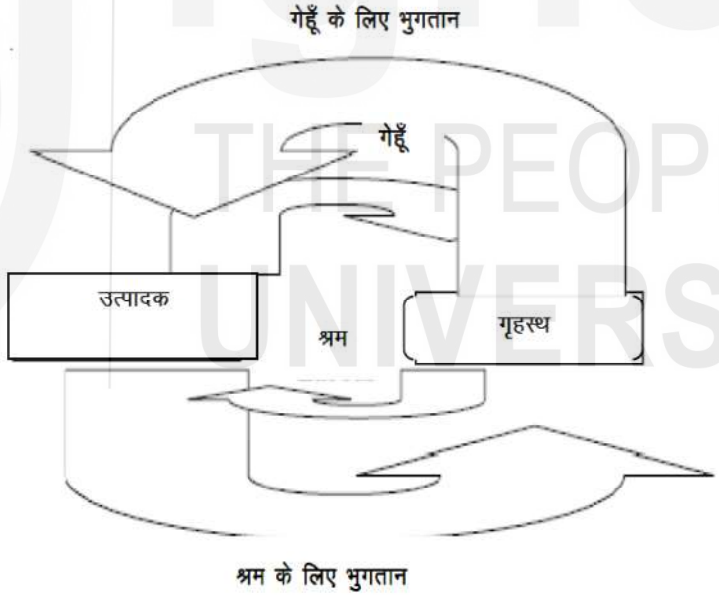

चित्र 2.3

उपरोक्त चित्र 2.3 में एक उत्पादक वस्तुओं का उत्पादन करता है तथा एक गृहस्थ को उनकी आपूर्ति करता है। तीर की दिशा वस्तुओं को प्राप्त करने वालों की ओर इंगित करती है। उसी प्रकार से एक गृहस्थ एक उत्पादक को साधन सेवाएँ प्रदान करता है जैसा कि तीर से दर्शाया गया है।

उदाहरण के तौर पर, एक उत्पादक द्वारा एक उपभोक्ता को वस्तुओं की आपूर्ति के बदले मुद्रा के रूप में उपभोक्ता द्वारा किया गया भुगतान उपभोग व्यय के रूप में दर्शाया गया है।

उसी प्रकार से उपभोक्ता से उत्पादक को प्रदान की जाने वाली साधन सेवाओं के बदले में उत्पादक द्वारा साधन भुगतान किए जाते हैं। यहाँ यह समझना होगा कि एक वस्तु–विनिमय अर्थव्यवस्था में वस्तुओं के बदले वस्तु देकर विनिमय किया जाता है। इसलिए ऐसी अर्थव्यवस्था में केवल वास्तविक प्रवाह ही होंगे। दूसरी ओर, एक अर्थव्यवस्था जहाँ वस्तुओं (सेवाओं) का विनिमय मुद्रा के द्वारा किया जाता है, उसमें वास्तविक एवं मौद्रिक प्रवाह दोनों होते है। यह भी संभव है कि आधुनिक अर्थव्यवस्था में कुछ प्रवाह केवल मौद्रिक ही हों जिनसे सम्बद्ध वास्तविक प्रवाह न हों। उदाहरण के लिए, पिता द्वारा पुत्र को दिए जाने वाले जेबखर्च से सम्बद्ध कोई वास्तविक प्रवाह नहीं होता क्योंकि पुत्र द्वारा इसके बदले में कुछ प्रदान नहीं किया जाता। इस प्रकार के चक्रीय प्रवाह पूर्ण नहीं होता। क्या हम कुछ ऐसे उदाहरण सोच सकते हैं जिनमें चक्रीय मौद्रिक प्रवाह चक्रीय चलन को पूर्ण करता है?

2.2.2 उद्यमों तथा गृहस्थों के बीच प्रवाह

विभिन्न आर्थिक इकाईयों के बीच परस्पर लेन–देन को प्रवाहों के रूप में रखकर ठीक प्रकार से समझा जा सकता है।

एक उद्यम एक आर्थिक इकाई में होती है जो गृहस्थों द्वारा दी गई साधन सेवाओं को लगाकर वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करता है। यह उत्पादन या तो अन्य फर्मों को बेचता है जिन्हें मध्यवर्ती उपभोग कहा जाता है, या फिर उपभोक्ताओं को बेचता है जिसे अंतिम उपभोग कहते हैं, और या फिर मशीन अथवा उपकरणों के रूप में निवेशकर्ताओं को बेचता है, जिसे निवेश कहते हैं। उपभोक्ता वस्तुओं तथा निवेश वस्तुओं को सम्मिलित रूप से 'अंतिम वस्तुएँ' कहा जाता है जो 'मध्यवर्ती वस्तुओं' से भिन्न होती हैं।

जब एक अर्थव्यवस्था में सभी फर्मों को एक समूह के रूप में लिया जाता है तो इस समूह के भीतर एक उद्यम द्वारा दूसरे उद्यम से खरीदी गई वस्तुएँ और सेवाएँ गिनी नहीं जातीं। गृहस्थ उद्यमों को साधन सेवा (भूमि, श्रम, पूँजी तथा उद्यमशीलता) प्रदान करते हैं और उद्यमों द्वारा उत्पादित उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग करते हैं। एक अर्थव्यवस्था में सभी गृहस्थों को एक समूह के रूप से लेने पर एक गृहस्थ से दूसरे गृहस्थ के बीच होने वाले आपसी लेन–देन स्वाभाविक रूप से गिने नहीं जाते हैं।

गृहस्थों एवं उत्पादकों के बीच अंतर व्यक्तियों को एक या दूसरी श्रेणी में रखने पर आधारित नहीं है; बल्कि एक व्यक्ति उपभोक्ता होने के साथ–साथ उत्पादक भी हो सकता है। उदाहरण के लिए, एक अध्यापक जब अध्यापन सेवाएँ उत्पादित करता है तो वह एक उत्पादक कहलाएगा और ज बवह अन्य उत्पादकों द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग करता है तो वह गृहस्थ होगा। इस प्रकार से कह सकते हैं कि गृहस्थ एवं उत्पादकों के बीच अंतर व्यक्तियों के आधार पर नहीं बल्कि कार्यों के आधार पर हैं। उद्यमों और गृहस्थों के बीच प्रवाहों को चित्र 2.4 की सहायता से दर्शाया जा सकता है: निम्नलिखित चित्र में वास्तविक एवं मौद्रिक प्रवाहों को दर्शाया गया है, की ओर उपभोक्ता

वस्तुओं तथा सेवाओं का प्रवाह तथा गृहस्थों से उद्यमों की ओर साधन सेवाओं का प्रवाह वास्तविक प्रवाह है। उसी प्रकार से उपभोग व्यय के रूप में उपभोक्ताओं से उत्पादकों की ओर प्रवाह और उद्यमों की ओर से साधन आय के रूप में गृहस्थों की ओर प्रवाह मौद्रिक प्रवाह हैं।

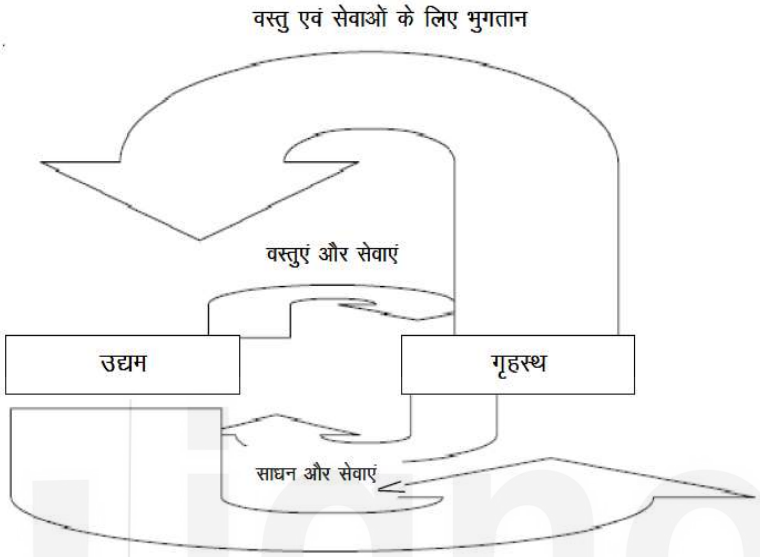

चित्र 2.4

इस प्रकार कहा जा सकता है कि चित्र 2.4, चित्र 2.3 से अधिक भिन्न नहीं है। चित्र 2.4 में सभी उत्पादकों एवं सभी उपभोक्ताओं के सम्मिलित रूप में, समूह बनाए गए हैं।

2.2.3 उद्यमों, गृहस्थों तथा पूँजी क्षेत्रों के बीच प्रवाह

अभी तक हमने जिन परिस्थितियों में प्रवाहों की चर्चा की है, उसमें कोई बचत तथा निवेश नहीं है। बचत और निवेश का अपनी चर्चा में सम्मिलित करने के लिए उद्यमों एवं गृहस्थों के साथ पूँजी क्षेत्र को सम्मिलित करना आवश्यक है।

पूँजी क्षेत्र वह क्षेत्र है जो अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों से बचत एकत्र करता है और उस बचत को निवेश (पूँजीगत वस्तुओं में) के उद्देश्य से उद्यमों को ऋण देता है। उद्यमों एवं गृहस्थों के साथ पूँजी क्षेत्र को सम्मिलित करते हुए, चित्र 2.5 में दर्शाया गया है:

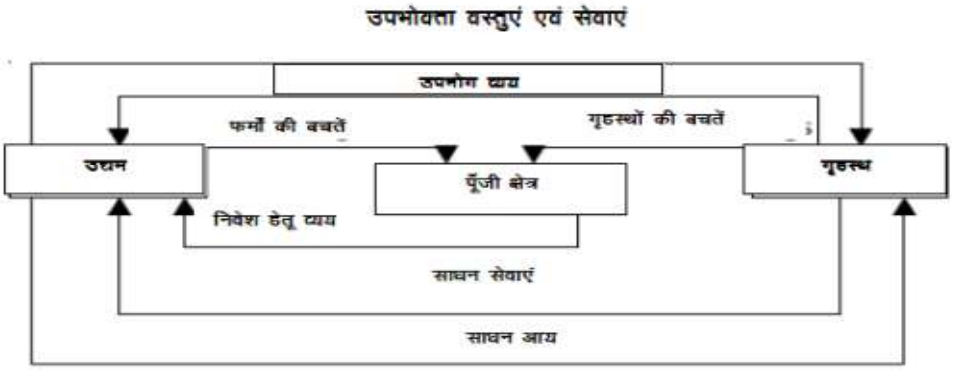

चित्र 2.5

उपरोक्त चित्र 2.4 की भाँति उद्यमों एवं गृहस्थों के बीच प्रवाहों को दर्शाया गया है तथा इनके अतिरिक्त गृहस्थों एवं पूँजी क्षेत्र के बीच तथा उद्यमों एवं पूँजी क्षेत्र के बीच भी प्रवाहों को भी दर्शाया गया है। गृहस्थ अपनी साधन आय पूरी तरह उपभोग पर व्यय करें यह आवश्यक नहीं है। आय का कुछ भाग बचा कर बैंकों मे जमा किया जा सकता है या शेयर अथवा जीवन बीमा खरीदने के लिए उपयोग किया जा सकता है। ये सभी पूँजी क्षेत्र के भाग माने जाते हैं।

इस प्रकार, गृहस्थों से पूँजी क्षेत्र की ओर तीर का निशान गृहस्थों से पूँजी क्षेत्र का बचत के प्रवाह की ओर इंगित करता है। यह बचतें पूँजी क्षेत्र गृहस्थों से, उद्यमों से अवितरित लाभों (जो भविष्य में विस्तार कार्यों हेतु रखे जाते हैं) के रूप में तथा घिसावट कोष (जो मशीन बदलने के निमित निवेश के लिए प्रयुक्त होते हैं) के रूप में बचतों को इकट्ठा करता है।

पूँजी क्षेत्र इन बचतों को निवेश के लिए उद्यमों को उधार देता है। इस प्रवाह को पूँजी क्षेत्र से उद्यमों की ओर तीर के निशान के द्वारा दर्शाया गया है।

2.2.4 उद्यमों, गृहस्थों, सरकारी क्षेत्रों के बीच प्रवाह

उद्यमों, गृहस्थों तथा पूँजी क्षेत्र के बीच प्रवाहों को चित्र 2.5 में दर्शाया गया है। अब हम इसमें सरकारी क्षेत्र के प्रवाहों को सम्मिलित करते हैं।

सरकारी क्षेत्र को दो प्रकार से देखा जा सकता है : (1) एक उत्पादक के रूप में; और (2) आय के एक पुनर्वितरक के रूप में। इस रूप में सरकार एक वर्ग पर कर लगाती है और इससे प्राप्त राशि को उद्यमों को नकद रूप में या फिर गृहस्थों को दीर्घ आयु पेंशन अथवा बेरोजगारी भत्ता के रूप में आर्थिक सहायता देती है। सरकार की उत्पादन गतिविधियों को 'सामान्य सरकार' तथा 'सरकारी उद्यम' दो रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है। साामन्य सरकार के रूप में सरकार सामूहिक उपभोग हेतु सेवाओं का उत्पादन करती है। ये सेवाएँ पुलिस सेवाओं अथवा प्रतिरक्षा–सेवाओं के रूप में हो सकती है। ये वे सेवाएँ हैं जो साधारणतया बाजार में नहीं बेची जाती। सरकार लोगों को सामूहिक रूप से उपभोग के लिए उपलब्ध करवाती है। सरकार के विभागीय अथवा गैर–विभागीय उद्यमों के कार्य को सरकारी उद्यम की श्रेणी में रखा जाता है। मुद्रा–प्रवाह में ये उद्यम का एक भाग है। इसलिए सरकार के आयों के पुनर्वितरक की भूमिका के कार्यों को ही, जिसमें सरकार सामूहिक उपभोग के लिए सेवाओं का उत्पादन करती है, अर्थव्यवस्था में प्रवाहों को समझने हेतु अन्य क्षेत्रों के साथ अलग से लिया जाता है। अन्य क्षेत्रों के बीच प्रवाहों की पहले की चर्चा की जा चुकी है। प्रवाहों के चार्ट में सरकार को सम्मिलित करके, चित्र 2.6 में दर्शाया गया है:

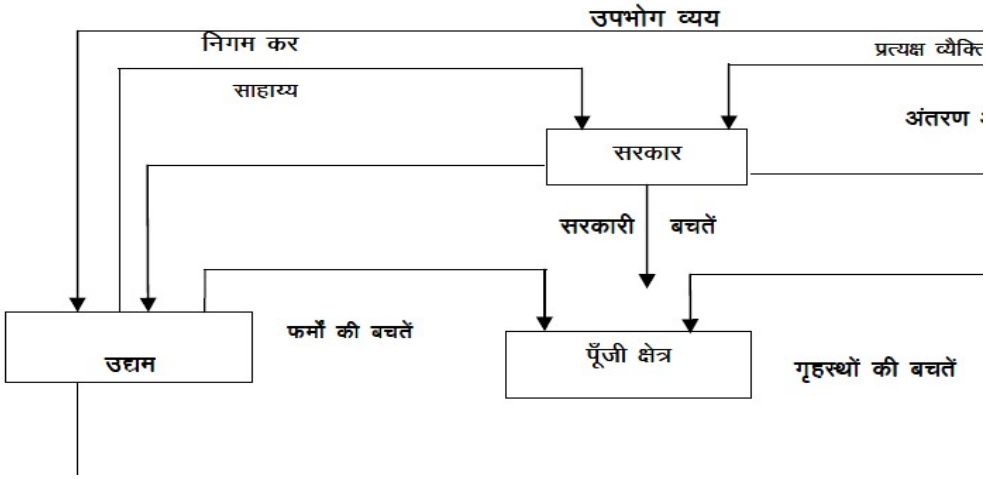

चित्र 2.6 में, चित्र 2.5 की भाँति उद्यमों, गृहस्थों तथा पूँजी क्षेत्र के साथ एक अतिरिक्त क्षेत्र यानी सरकार को सम्मिलित किया गया है। इस चित्र में सरकार की ओर से एक अतिरिक्त प्रवाह पूँजी क्षेत्र को बचत के रूप में जाता है।

यह बचत धनात्मक अथवा ऋणात्मक हो सकती है। यह ऋणात्मक होगी यदि सरकार द्वारा व्यय सरकार द्वारा प्राप्त राजस्व से अधिक हो। यदि सरकार का व्यय उसके राजस्व से कम होता है तो सरकारी बचत धनात्मक होगी।

जब हम अन्य क्षेत्रों के साथ सरकारी क्षेत्र को भी चित्र 2.6 में सम्मिलित करते हैं तो पाते हैं कि गृहस्थों द्वारा साधन सेवाओं के बदले उद्यमों से प्राप्त आयों को केवल उद्यमों द्वारा उत्पादित उपभोग वस्तुओं पर ही खर्च करना आवश्यक नहीं है। साधन आयों का एक भाग सरकार को प्रत्यक्ष वैयक्तिक करों के रूप में दिया जा सकता है। इसको गृहस्थों से सरकार की ओर तीर निशान द्वारा दिखाया गया है। दूसरी ओर, सरकार गृहस्थों को आय हस्तांतरण कर सकती है, जिसे सरकार से गृहस्थों की ओर तीर निशान से दिखाया गया है। उसी प्रकार से उद्यम भी अपनी प्राप्तियों का कुछ भाग सरकार को अप्रत्यक्ष करों और निगम करों के रूप में दे सकते हैं, जिसे उद्यम से सरकार की ओर तीर निशान द्वारा दिखाया गया है। सरकार भी अपने कर राजस्व का कुछ भाग उद्यमों को आर्थिक सहायता के रूप में दे सकती है। यह सरकार से उद्यम की ओर तीर निशान द्वारा दिखाया गया है।

2.2.5 एक अमावृत अर्थव्यवस्था में प्रवाह

चित्र 2.6 में एक संवृत अर्थव्यवस्था (एक अर्थव्यवस्था जिसके शेष विश्व के साथ आयात–निर्यात इत्यादि के रूप में किसी भी प्रकार का आर्थिक लेन–देन न हो) के प्रवाहों को दिखाया गया है। अब अंत में हम एक अनावृत अर्थव्यवस्था के विश्व के अन्य देशों (जिसे शेष विश्व कहेंगे) के साथ लेन–देन के प्रवाहों को सम्मिलित करते हैं।

जब एक अर्थव्यवस्था अनावृत अर्थव्यवस्था हो तो निम्नलिखित लेन–देन को भी अर्थव्यवस्था के प्रवाहों में सम्मिलित किया जाएगाः

1) उद्यमों के उत्पादन का कुछ भाग उपभोग अथवा निवेश कार्यों के लिए छोड़कर शेष भाग को शेष विश्व को निर्यात किया जा सकता है। इस निर्यात के बदले में शेष विश्व द्वारा उद्यमों को भुगतान किया जाता है।

2) गृहस्थों द्वारा उपभोग व्यय मात्रा अर्थव्यवस्था में ही उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं पर न होकर, शेष विश्व से आयातित वस्तुओं और सेवाओं पर भी हो सकता है।

3) गृहस्थ मात्र घरेलू उद्यमों से ही नहीं बल्कि शेष विश्व से भी साधन आय प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार, शेष विश्व भी दी गई अर्थव्यवस्था से साधन आय प्राप्त कर सकता है। विदेशों से प्राप्त साधन आया में से शेष विश्व को दी गई साधन आय कम कर देने पर विदेशों से प्राप्त 'शुद्ध साधन आय' प्राप्त होती है जो धनात्मक हो सकती है और ऋणात्मक भी। यह धनात्मक होगी जब देश के सामान्य निवासियों द्वारा शेष विश्व से अर्जित साधन आय, शेष विश्व को दी गई अर्जित साधन आय से अधिक हो।

4) एक अन्य तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि जो बचतें पूँजी क्षेत्र में एकत्र होती है, केवल गृहस्थ, उद्यमों तथा सरकार से ही प्राप्त नहीं होती, बल्कि कुछ बचतें शेष विश्व से भी प्राप्त हो सकती हैं, जिसे शेष विश्व से निवल पूँजी प्रवाह कहा जाता है। यह धनात्मक अथवा ऋणात्मक दोनों हो सकता है। जब शेष विश्व से प्राप्त ऋण, शेष विश्व को दिए गए ऋण से अधिक हो तो शेष विश्व से निवल

पूँजी प्रवाह धनात्मक होगा। यदि शेष विश्व से ऋण शेष विश्व को ऋण से कम हो तो शेष विश्व से निवल पूँजी प्रवाह ऋणात्मक होगा।

5) एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अर्थव्यवस्था के सृजित बचतों तथा शेष विश्व से प्राप्त बचतों का उपयोग केवल सकल पूँजी घरेलू पूँजी निर्माण (निवेश जमा निवल घरेलू पूँजी निर्माण) के लिए ही नहीं बल्कि निवल विदेशी निवेश के लिए भी किया जा सकता है। 'निवल विदेशी निवेश' धनात्मक और ऋणात्मक, दोनों हो सकता है। यह धनात्मक होगा जबकि इस अर्थव्यवस्था द्वारा शेष विश्व में किया गया निवेश, शेष विश्व द्वारा इस अर्थव्यवस्था में किए गए निवेश से अधिक हो। यह ऋणात्मक होगा जबकि इस अर्थव्यवस्था द्वारा शेष विश्व में किया गया निवेश शेष विश्व द्वारा इस अर्थव्यवस्था में किए गए निवेश से कम हो।

6) जैसे कि एक अर्थव्यवस्था के भीतर भी कुछ एक–तरफा हस्तांतरण हो सकते हैं। उसी प्रकार से एक अर्थव्यवस्था से शेष विश्व को और शेष विश्व से इस अर्थव्यवस्था की ओर भी एक–तरफा हस्तांतरण हो सकते हैं। इसका योग शेष विश्व से प्राप्त शुद्ध चालू हस्तांतरण कहलाता है। यह भी धनात्मक तथा ऋणात्मक दोनों हो सकता है। यह धनात्मक होगा यदि शेष विश्व से इस अर्थव्यवस्था को चालू हस्तांतरण, इस अर्थव्यवस्था से शेष विश्व को चालू हस्तांतरण अधिक हों। यह ऋणात्मक होगा जबकि शेष विश्व से इस अर्थव्यवस्था को चालू हस्तांतरण, इस अर्थव्यवस्था द्वारा शेष विश्व को चालू हस्तांतरण से कम हों।

चित्र 2.6 में एक संवृत अर्थव्यवस्था के प्रवाहों को दर्शाया गया है जबकि चित्र 2.7 में उन प्रवाहों को भी शामिल किया गया है जो संवृत अर्थव्यवस्था के खुलने से सृजित होते हैं।

अर्थव्यवस्था के खुलने के कारण पैदा होने वाले प्रवाह चित्र 2.6 में दर्शाए गए एक संवृत अर्थव्यवस्था के प्रवाहों से काफी भिन्न हैं।

उद्यमों को गृहस्थों द्वारा उपभोग व्यय से ही मुद्रा प्राप्त नहीं होती बल्कि वस्तुओं और सेवाओं के शुद्ध निर्यात से भी प्राप्त होती है।

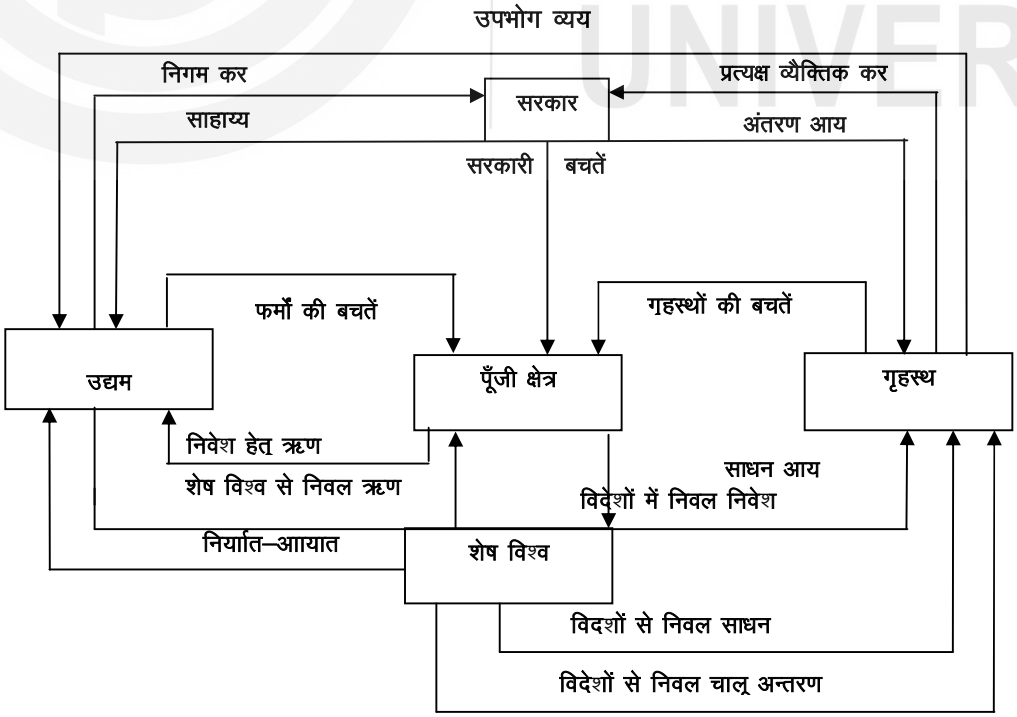

चित्र:2.7

शुद्ध निर्यात, निर्यात और आयात के अंतर से प्राप्त होता है। यह धनात्मक और ऋणात्मक दोनों हो सकता है। जब निर्यात, आयातों से अधिक हों तो यह धनात्मक होगा और जब निर्यात आयातों से कम हों तो यह ऋणात्मक होगा। निर्यातों के प्राप्तियों के प्रवाह को शेष–विश्व से प्रारंभ होकर उद्यमों की ओर तीर के निशान से दिखाया गया है और आयातों के भुगतान को उद्यमों से प्रारंभ करके शेष–विश्व की ओर तीर के निशान से दिखाया गया है।

इसी प्रकार से 'विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय' शेष–विश्व से गृहस्थों की ओर तीर के निशान से दिखाया गया है।

यही बात विदेशों से प्राप्त शुद्ध चालू हस्तांतरण पर भी लागू होती है, जहाँ तीर का निशान शेष–विश्व से गृहस्थों की ओर इंगित किया गया है। शेष–विश्व से प्राप्त ऋणों को शेष–विश्व से पूँजी क्षेत्र की ओर तीर के निशान से इंगित किया गया है।

इस प्रकार से चित्र 2.7 में एक अर्थव्यवस्था में होने वाले प्रवाहों का पूरा निरूपण है, जिसमें उद्यम, गृहस्थ सरकार, पूँजी क्षेत्र तथा शेष–विश्व क्षेत्र नामों से पाँच क्षेत्र हैं। यदि इन क्षेत्रों को और अधिक छोटे भागों में विभाजित किया जाए तो प्रवाह दिखाना और अधिक जटिल हो जाएगा। साधारण बीमा निगम, शेयर बाजार आदि में; सरकार को केंद्र, राज्य एवं स्थानीय निकायों; और शेष–विश्व को विभिन्न देशों में बाँटा जाए तो प्रवाहों की जटिलता की कल्पना की जा सकती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि ऐसी स्थिति में विभिन्न क्षेत्रों के अंतरंग लेन–देनों को भी दर्शाना पड़ेगा।

बोध प्रश्न 1

1) उपयुक्त उदाहरणों की सहायता से मौद्रिक तथा वास्तविक प्रवाहों के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) किसी अर्थव्यवस्था के चक्रीय प्रवाह के अध्ययन में प्रयुक्त विभिन्न आर्थिक लेन–देनों के बारे में बताइए।

.....

.....

.....

.....

3) यह बताइए कि जब उद्यमों एवं गृहस्थ क्षेत्र के साथ पूँजी क्षेत्र को सम्मिलित किया जता है तो चक्रीय प्रवाह किस प्रकार से जटिल होता है।

.....

.....

.....

.....

2.3 चक्रीय प्रवाह तथा राष्ट्रीय आय

भाग 2.2 में प्रस्तुत चक्रीय प्रवाह, एक अर्थव्यवस्था के कार्यों को समझने के लिए आवश्यक है। इन प्रवाहों के अध्ययन से हम कई समष्टिगत आर्थिक समुच्चयों को ज्ञात कर सकते हैं जो अर्थव्यवस्था के आर्थिक स्वास्थ्य की ओर इंगित करते हैं।

ऐसे कुछ समष्टिगत आर्थिक समुच्चय हैं :– सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product), शुद्ध घरेलू उत्पाद (Net Domestic Product), सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product), शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product), और राष्ट्रीय आय (National Income)।

भाग 2.3 के आगामी उप–भागों में हम इन समूहों, विशेषतौर पर राष्ट्रीय आय को चक्रीय प्रवाहों से ज्ञात करने का प्रयास करेंगे। हम चित्र 2.7 का उपयोग करते हुए हम राष्ट्रीय आय को उसके तीनों दृष्टिकोणों से ज्ञात करेंगे। यह तीन दृष्टिकोण हैं – (1) वस्तुओं और सेवाओं का प्रवाह, (2) साधन आय का प्रवाह, और (3) अंतिम व्यय का प्रवाह।

2.3.1 वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय

अब हम चित्र 2.7 पर ताजा दृष्टि डालेंगे और राष्ट्रीय आय को उद्यम के छोर पर देखेंगे। यदि हम एक वर्ष में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह के मौद्रिक मूल्य को बिना दोहरी गणना के जमा करें और स्थिर पूँजी के उपभोग हेतु प्रावधान करते हुए, विदेशों से प्राप्त कुल साधन आयों को जमा करें तो अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय प्राप्त की जा सकती है। आइए इस बात को विस्तार से समझते हैं। उद्यम उपभोक्ता वस्तुओं (c) तथा शुद्ध घरेलू पूँजी निर्माण (i) का उत्पादन करते हैं। यदि हम इसमें विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय (x) को जमा करें तो हमें एक अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय प्राप्त होगी। इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि $Y = C+I+X$ जहाँ Y, राष्ट्रीय आय है और C, I तथा X को ऊपर परिभाषित किया गया है। इस परिभाषा में हमें ध्यान में रखना होगा कि वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य साधन लागत (factor cost यानि FC) पर लिया जाए, न कि बाजार कीमत पर (market price यानि MP) जहाँ $MP = FC + NIT$, जहाँ NIT निवल अप्रत्यक्ष कर हैं, (जहाँ निवल अप्रत्यक्ष कर अप्रत्यक्ष – आर्थिक सहायताएँ)। यहाँ यह भी देखना होगा कि जो वस्तुएँ और सेवाएँ एक उद्यम द्वारा दूसरे उद्यम से मध्यवर्ती उपयोग के लिए खरीदी जाती हैं (जो कच्चा माल एक उद्यम द्वारा दूसरे से खरीदा जाए) उनका मूल्य उन वस्तुओं और सेवाओं के साथ नहीं जोड़ना चाहिए जो गृहस्थ द्वारा उनके अंतिम उपभोग के लिए अथवा अर्थव्यवस्था के कुल पूँजी स्टॉक में वृद्धि के लिए प्रयुक्त हो रही हों। ऐसी दोहरी गणना से बचने के लिए किया जाता है।

उदाहरण के लिए, यदि हम गेहूँ के कुल उत्पादन को ब्रेड के कुल उत्पादन के साथ जोड़ें तो हम दोहरी गणना करेंगे क्योंकि ब्रेड के मूल्य में गेहूँ का मूल्य भी पहले से सम्मिलित है।

राष्टीय आय के मापन की यह विधि उत्पादन विधि अथवा उत्पाद विधि कहलाती है। आगे हम देखेंगे कि उत्पादन विधि को मूल्य वृद्धि विधि भी कहते हैं।

2.3.2 साधन आयों के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय

हम चित्र 2.7 पर पुनः दृष्टि डालते हैं, जहाँ हम राष्ट्रीय आय समुच्चय को गृहस्थ छोर पर रखते हैं। गृहस्थ उद्यमों को वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए साधन सेवाएँ प्रदान करते हैं। ये साधन सेवाएँ चार प्रकार के उत्पादन के साधनों द्वारा प्रदान की जाती हैं। ये हैं – श्रम, भूमि, पूँजी तथा उद्यमशीलता। ये उत्पादन के साधन सीमित होते हैं।

इसलिए इन उत्पादन के साधनों के आपूर्तिकर्ताओं को उनकी साधन सेवाओं के लिए मजदूरी, किराया, ब्याज तथा लाभ के रूप में पारितोषिक दिया जाता है।

इस प्रकार यदि हम मज़दूरी, किराया, ब्याज तथा लाभ के साथ विदशों से प्राप्त साधन आयों को जमा करें तो हमें अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय प्राप्त होती है। यानि Y + W + R = In + P + X, जहाँ Y राष्ट्रीय आय है जो मज़दूरी (W), किराया (R), ब्याज (In) तथा लाभ (P) एवं विदेशों से प्राप्त कुल साधन आय का जोड़ है। जहाँ पर साधन सेवाएँ प्रदान करने के बदले गृहस्थों को प्राप्त सभी साधन आयों को जोड़ दिया गया है।

अवधारणात्मक रूप से अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय, उत्पादन प्रक्रिया के दौरान आय के रूप में राष्ट्रीय आय के समान है।

कई बार साधन आय को W, R, In तथा P के वर्गों में रखकर भिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है। जैसे श्रमिकों का मुआवज़ा (Compensation of employees), प्रचालन अधिशेष (CE), तथा स्व–रोज़गार में लगे हुए व्यक्तियों की मिश्रित आय (MY)।

इस प्रकार से Y = CE + OS + MY + X जहाँ CE श्रम को उसकी श्रम सेवाओं के बदले पारितोषिक है, OS सम्पत्ति के स्वामित्व तथा प्रबंधन के बदले मिलने वाली साधन आय है, MY साधन आय का वह भाग है जिसका CE तथा OS के रूप में विभेद नहीं हो सकता है और X विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय है (पहले से परिभाषित)। जबकि CE तथा OS को तो आसानी से समझा जा सकता है, MY के लिए थोड़ा विवेचन आवश्यक है। MY स्वरोज़गार में लगे हुओं की आय है। उदाहरण के लिए, हम एक छोटे दुकानदार को लें जो अपने घर में दुकान चलाता है, अपने एवं अपने परिवार के श्रम का प्रयोग करता है, स्वयं दुकान का प्रबंधन करता है और जोखिम उठाता है। इसकी आय को विभिन्न आय वर्गों में वर्गीकरण करना संभव नहीं होता। ऐसी साधन आय को वैकल्पिक रूप से स्व–रोज़गार युक्तों की मिश्रित आय की श्रेणी में रखा जाता है क्योंकि इस आय को CE और CS में नहीं बाँटा जा सकता।

2.3.3 अंतिम व्ययों के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय

हम चित्र 2.7 का उपयोग राष्ट्रीय आय को एक अर्थव्यवस्था के विभिन्न वर्गों के अंतिम व्ययों के जोड़ के रूप में देखने के लिए भी कर सकते हैं।

दूसरे शब्दों में हम अब वस्तुओं और सेवाओं को उनके उत्पादन की दृष्टि से न देखकर उनके उपयोग की ओर देखेंगे। अंतिम व्यय के कई स्रोत हो सकते हैं जैसे उपभोक्ताओं द्वारा अंतिम उपभोग व्यय (C_h), सरकार द्वारा अंतिम उपभोग व्यय (C_g), फर्मों द्वारा शुद्ध घरेलू पूँजी निर्माण के लिए पूँजीगत वस्तुओं की खरीद पर व्यय (NDKF) तथा स्टॉक में परिवर्तन (K) या शेष–विश्व द्वारा शुद्ध निर्यातों (NE) के रूप में।

'स्टॉक' में परिवर्तन को वर्ष के अंत में तैयार वस्तुओं तथा कच्चे माल/अर्ध–निर्मित वस्तुओं के स्टॉक में से इन वस्तुओं के वर्ष के प्रारंभ के स्टॉक में से घटाकर प्राप्त करते हैं। स्टॉक में परिवर्तन धनात्मक होगा, यदि वर्ष के अंत का स्टॉक वर्ष के प्रारंभ के स्टॉक से अधिक हो और दूसरी ओर यह ऋणात्मक होगा यदि वर्ष के अंत का स्टॉक वर्ष के प्रारंभ के स्टॉक से कम हो।

हम सब अंतिम व्ययों के प्रवाह के रूप में, राष्ट्रीय आय को देख सकते हैं। $Y = C_h + C_g$ + NDFK + NF + X। उपरोक्त समीकरण में प्रयुक्त सभी तत्त्वों को पहले से ही परिभाषित किया जा चुका है। चूँकि राष्ट्रीय आय साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद के रूप में परिभाषित है इसलिए उपरोक्त समीकरण में से शुद्ध अप्रत्यक्ष करों को (NIT)

घटाना होगा। ऐसा इसलिए आवश्यक है क्योंकि C_h, C_g, NDFK तथा NE सभी साधारणतया बाज़ार कीमत पर दर्शाए जाते हैं, और इन सभी को साधन लागत पर दिखाने के लिए उनमें से शुद्ध अप्रत्यक्ष (NIT) घटाना आवश्यक है। अंततः व्ययों के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय के समीकरण का स्वरूप इस प्रकार से होगाः

$$Y = C_h + C_g + NDFKP + X - NIT$$

(इसमें प्रयुक्त सभी तत्वों की परिभाषा पहले से ही की जा चुकी है।)

2.3.4 उत्पादन, आय तथा व्यव के प्रवाहों के रूप में राष्ट्रीय आय

अब हम बताने की स्थिति तक पहुँच चुके हैं कि भाग 2.3.1, 2.3.2, 2.3.3 के अनुसार राष्ट्रीय आय को हम उत्पादन, आय तथा व्यय प्रवाहों से प्राप्त कर सकते हैं। वस्तुओं ओर सेवाओं के उत्पादन के लिए साधन सेवाओं की आवश्यकता होती है, और इस प्रकार से साधन आयों का सृजन होता है। इस प्रकार से प्राप्त साधन आयों को अंतिम उपभोग अथवा बचत के लिए प्रयोग किया जाता है। अंततः बचतों को देश में पूँजी निर्माण अथवा शुद्ध विदेशी निवेश के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

यदि सभी आवश्यक सांख्यिकी/आँकड़े उपलब्ध हों तो राष्ट्रीय आय ज्ञात करने के ये तीनों मार्ग एक ही मूल्य देंगे। यथार्थ में यह सभी आवश्यक आँकड़े उपलब्ध होना अनिवार्य नहीं होता। इसलिए हमें इन तीनों विधियों को मिला–जुलाकर उपयोग करने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

राष्ट्रीय आय के मापन हेतु सबसे पहला कार्य, अर्थव्यवस्था का विभिन्न औद्योगिक क्षेत्र में वर्गीकरण है, जैसे कृषि, खनन विनिर्माण, संपदा, सरकारी सेवाएँ, परिवहन सेवाएँ, वाणिज्य सेवाएँ इत्यादि। इसके बाद सूचनाओं एवं आँकड़ों की उपलब्धता के आधार पर, विधि का चयन किया जाता है। उदाहरण के लिए, कृषि एवं विनिर्माण क्षेत्र के लिए उत्पादन आँकड़े आसानी से उपलब्ध होते हैं। इसलिए हम इन क्षेत्रों का उत्पादन अथवा मूल्य वृद्धि विधि से ज्ञात करते हैं।

निर्माण क्षेत्र के लिए व्यय के आँकड़े आसानी से उपलब्ध होते हैं, इसलिए राष्ट्रीय आय में इसके योगदान को ज्ञात करने के लिए व्यय विधि का उपयोग होता है। अंततः सेवा क्षेत्र के लिए आय सृजन के आँकड़े आसानी से उपलब्ध होते हैं, इसलिए इसके राष्ट्रीय आय में योगदान को ज्ञात करने के लिए आय विधि का उपयोग अनिवार्य हो जाता है।

बोध प्रश्न 2

1) दिखाइए कि एक अर्थव्यवस्था में उत्पादन प्रवाह, आय प्रवाह तथा व्यय प्रवाह किस प्रकार से एक–दूसरे से संबंधित हैं।

.....

.....

.....

.....

2) राष्ट्रीय आय के मुख्य घटक कौन से हैं?

i) वस्तुओं और सेवाओं का चालू उत्पादन

.....

.....

.....

.....

ii) साधन आयों का चालू सृजन

.....

.....

.....

.....

3) भारत में राष्ट्रीय आय के मापन के लिए उत्पादन, आय और व्यव विधि का मिला–जुला उपयोग क्यों किया जाता है?

.....

.....

.....

.....

2.4 राष्ट्रीय आय समुच्चय

राष्ट्रीय आय एक अत्यंत महत्वपूर्ण समष्टिगत आर्थिक समुच्चय है जो कुछ शर्तों के पूरा होने पर अर्थव्यवस्था की आर्थिक प्रगति का परिचायक है। इसी से संबंधित कई अन्य अवधारणाएँ है जो महत्वपूर्ण है और हमें विभिन्न समष्टि–आर्थिक समुच्च्यों के बीच संबंधों को भी भँली प्रकार समझ लेना चाहिए।

2.4.1 राष्ट्रीय आय तथा विभिन्न संबंधित अवधारणाएँ

राष्ट्रीय आय से संबंधित अवधारणाओं में से कुछ प्रमुख इस प्रकार से हैं :

1) **बाजार कीमतों पर सकल, राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product at Market Price- GNP_{MP})** : यह एक वर्ष में एक अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासियों द्वारा, दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है। इसमें घिसावट शामिल होती है और वस्तुओं एवं सेवाओं का बाजार कीमतों पर मूल्यांकन किया जाता है।

2) **साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product at Factor Cost- GNP_{FC})** : यह एक वर्ष में एक अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासियों द्वारा, दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है। जिसमें से घिसावट शामिल होती है और वस्तुओं एवं सेवाओं का साधन लागत (बाजार कीमत–निवल अप्रत्यक्ष कर) पर मूल्यांकन किया जाता है।

3) **बाजार कीमतों पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product at Market Price- NNP_{MP})** : यह एक वर्ष में एक अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासियों द्वारा,

दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है। जिसमें से घिसावट को घटा दिया जाता है और वस्तुओं एवं सेवाओं का बाजार कीमतों पर मूल्यांकन किया जाता है।

4) **साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product at Factor Cost- NNP_{FC})** : यह एक वर्ष में एक अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासियों द्वारा, दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है। इसमें से घिसावट को घटा दिया जाता है और वस्तुओं का साधन लागत (बाजार कीमत–शुद्ध अप्रत्यक्ष कर) पर मूल्यांकन किया जाता है।

5) **राष्ट्रीय आय (National Income - NY)** : यह साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद के समान ही है।

6) **बाजार कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product at Market Price- GDP_{MP})** : यह एक अर्थव्यवस्था के घरेलू क्षेत्र के अंतर्गत, दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है जिसमें घिसावट शामिल रहती है और वस्तुओं एवं सेवाओं का बाजार कीमतों पर मूल्यांकन किया जाता है।

7) **साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product at Factor Cost- GDP_{FC})** : यह एक अर्थव्यवस्था के घरेलू क्षेत्र के अंतर्गत, दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है जिसमें घिसावट शामिल रहती है और वस्तुओं एवं सेवाओं का साधन लागत (बाजार कीमत–शुद्ध प्रत्यक्ष कर) पर मूल्यांकन किया जाता है।

8) **बाज़ार मूल्यों पर शुद्ध राष्ट्रीय आय (Net Domestic Product at Market Price- NDP_{MP})** : यह एक अर्थव्यवस्था के घरेलू क्षेत्र के अंतर्गत, दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है जिसमें घिसावट घटा दी जाती है और वस्तुओं एवं सेवाओं का बाजार कीमतों पर मूल्यांकन किया जाता है।

9) **साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद (Net Domestic Product at Factor Cost- NDP_{FC})** : यह एक अर्थव्यवस्था के घरेलू क्षेत्र के अंतर्गत, दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है जिसमें घिसावट घटा दिया जाता है। वस्तुओं एवं सेवाओं का साधन लागत (बाजार कीमत–शुद्ध अप्रत्यक्ष कर) पर मूल्यांकन किया जाता है।

10) **शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय (Net Disposable Income - NNDY)** : यह अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासियों द्वारा एक वर्ष में अर्जित आय और हस्तांतरण आय का योग है जिसमें शुद्ध अप्रत्यक्ष कर शामिल होते है। यह बाज़ार कीमतों पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद में शेष विश्व से प्राप्त शुद्ध चालू अंतरणों के योग से प्राप्त होती है। (NNPMP + Net Current transfer from Rest of the World)

11) **घरेलू उत्पाद से निजी क्षेत्र को प्राप्त आय (Income from Domestic Product accruing to Private Sector/Z)** : यह एक वर्ष में एक अर्थव्यवस्था के गृहस्थों और निजी निगम क्षेत्र को प्राप्त साधन आय है।

12) **निजी आय (Private Income - PY)** : इसमें एक अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासियों द्वारा एक वर्ष में अर्थव्यवस्था के अंतर्गत प्राप्त साधन आय तथा चालू अंतरण आयों के अतिरिक्त विदशों से प्राप्त अंतरण आय भी शामिल है।

13) **वैयक्तिक आय (Personal Income)** : इसमें एक अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासी गृहस्थों द्वारा प्राप्त एक वर्ष में साधन आय तथा चालू अंतरणों के अतिरिक्त विदेशों से प्राप्त अंतरण आय भी शामिल है।

14) **वैयक्तिक प्रयोज्य आय (Personal Disposable Income - PDY)** : इसे एक अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासी गृहस्थों द्वारा प्राप्त एक वर्ष में साधन आय तथा चालू अंतरणों के अतिरिक्त विदशों से प्राप्त अंतरण आयों में से वैयक्तिक कर तथा अन्य प्रशासनिक भुगतान कर ज्ञात किया जाता है।

15) **वैयक्तिक उपभोग व्यय (Personal Consumption Expenditure - C_h)** : यह वैयक्तिक प्रयोज्य आय में से वैयक्तिक बचतों (यदि गृहस्थों की बचतें) को घटाकर प्राप्त होती है।

2.4.2 विभिन्न समष्टिगत आर्थिक समुच्च्यों के बीच अंतर्संबंध

भाग 2.4.1 में राष्ट्रीय आय तथा संबंधित अवधारणाओं से आपको परिचित कराया गया है। इस भाग में हम इन विभिन्न समुच्च्यों के बीच संबंधों का विवेचन कर रहे हैं।

- बाजार कीमतों पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद – शुद्ध अप्रत्यक्ष कर = साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद

  $\{GNP_{MP} – \text{Net Indirect Taxes (NIT)} = GNP_{FC}\}$

- साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद – घिसावट = साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद

  $\{GNP_{FC} – \text{Depreciation (D)} = NNP_{FC}\}$

- साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद – विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय = लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद

  $\{NNP_{FC} – \text{Net factor income abroad (X)} = NDP_{FC}\}$

- साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद + शुद्ध अप्रत्यक्ष कर विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय + शेष विश्व से प्राप्त शुद्ध चालू अंतरण = शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय

  $\{NDP_{FC} + NIT + X + \text{Net current transfers from rest of the world} = NNDY\}$

- शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय – विदेशों से प्राप्त शुद्ध आय – शेष विश्व से प्राप्त शुद्ध चालू अंतरण – शुद्ध अप्रत्यक्ष = कर साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद

  $\{NNDY – X – \text{Net current transfers from ROW} – NIT = NDP_{FC}\}$

- साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद – घरेलू उत्पाद से सरकारी प्रशासनिक विभागों को प्राप्त आय – गैर–विभागीय उद्यमों की बचतें = घरेलू उत्पाद से निजी क्षेत्र को प्राप्त आय (z)

  $\{NDP_{FC} – \text{Income from Domestic Product accuring to government admisitrative departments} – \text{saving of non-departmental enterprises} = \text{Income from Domestic Product Accuring to Private Sector (Z)}\}$

- घरेलू उत्पाद से निजी क्षेत्र को प्राप्त आय + विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय + राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज + सरकारी प्रशासनिक विभागों से अंतरण भुगतान + शेष विश्व से शुद्ध चालू अंतरण = निजी आय।

  (Z + X + National Debt Interest + Transfer Payments by government admisitrative departments + NCT form ROW + Private Income)

- निजी आय – निजी निगमित क्षेत्र के अवितरित लाभ – निगम कर = व्यैक्तिक आय

  (Private Income – undistributed Profits of Private corporate sector – Corporation tax = Personal Income)

- व्यैक्तिक आय – प्रत्यक्ष व्यैक्तिक कर – सरकारी प्रशासनिक विभागों की विभिन्न प्राप्तियाँ = व्यैक्तिक प्रयोज्य आय।

  (Personal Income – Direct Personal Taxes – Miscellaneous Receipts of governments administrative departments = PDY)

- व्यैक्तिक प्रयोज्य आय – व्यैक्तिक उपभोग व्यय = गृहस्थों की बचतें।

  (Personal Disposable Income – Personal consumption Expenditure = Household Saving)

- गृहस्थों की बचतें + निजी निगमों की बचतें + सरकारी बचतें + घिसावट = सकल घरेलू बचत

  (Household + Depeciation = Gross Domestic Saving)

- सकल घरेलू बचत/बाजार कीमतों पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद x 100 = सकल घरेलू बचत दर

  (Gross Domestic Saving/GDP_{FC} x 100 = Rate of Gross Domestic Saving)

- सकल घरेलू पूँजी निर्माण = घिसावट शुद्ध घरेलू स्थिर निर्माण स्टॉक में परिवर्तन

  (Gross Domestic Capital Formation = Depreciation + Net Domestic Fixed Capital Formation + Change in stocks)

- सकल घरेलू पूँजी निर्माण/सकल घरेलू उत्पाद x 100 = सकल घरेलू पूँजी निर्माण दर

  (Gross Domestic Capital Formation/GDP_{MP} x 100 = Rate of Gross Domestic Capital Formation)

- शुद्ध घरेलू बचत/बाज़ार कीमतों पर शुद्ध घरेलू उत्पाद x 100 = शुद्ध घरेलू बचत दर (Net Domestic Saving/NDP_{MP} x 100 = Rate of Net Domestic Saving)

- सकल घरेलू पूँजी निर्माण – घिसावट = शुद्ध घरेलू पूँजी निर्माण

  (Gross Domestic Capital Formation – Depreciation + Net Domestic Capital Formation)

- शुद्ध घरेलू पूँजी निर्माण/बाज़ार कीमतों पर शुद्ध घरेलू उत्पाद × 100 = शुद्ध घरेलू पूँजी निर्माण दर (Net Domestic Capital Formation/NDP_{MP} × 100 = Rate of Net Domestic Capital Formation)

- सकल घरेलू पूँजी निर्माण दर – सकल घरेलू बचत दर = शुद्ध विदेशी पूँजी अंतः प्रवाह की दर = शुद्ध घरेलू पूँजी निर्माण दर = शुद्ध घरेलू बचत दर

  (Rate of Gross Domestic Capital Formation – Rate of Gross Saving)

  = Rate of Net Foreign Capita inflow

  = Rate of Net Domestic Capital Formation = Rate of Net Domestic Saving

बोध प्रश्न 3

1) निजी उपभोग व्यय से प्रारंभ कर साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद ज्ञात करें।

.....

.....

.....

.....

2) शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय और निजी प्रयोज्य आय में संबंध बताइए।

.....

.....

.....

.....

3) निम्नलिखित के बीच किस आधार पर अंतर किया जाता है :

i) सकल घरेलू उत्पाद तथा शुद्ध घरेलू उत्पाद

.....

.....

.....

.....

ii) सकल राष्ट्रीय उत्पाद तथा शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद

.....

.....

.....

.....

iii) राष्ट्रीय आय तथा शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय

.....

.....

.....

.....

iv) बाज़ार कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद तथा साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद

.....

.....

.....

.....

v) बाज़ार कीमतों पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद तथा शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय

.....

.....

.....

.....

vi) वैयक्तिक आय तथा वैयक्तिक प्रयोज्य आय

.....

.....

.....

.....

2.5 सार संक्षेप

इस इकाई में हमने आपको चक्रीय प्रवाहों की अवधारणाओं के बारे में बताया। यह भी बताया कि इन चक्रीय प्रवाहों से किस प्रकार से एक अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय ज्ञात की जा सकती है।

चक्रीय प्रवाही की अवधारणा का संबंध एक वर्ग से दूसरे के बीच वास्तविक एवं मुद्रा के लेन–देन से है। वास्तविक लेन–देनों के प्रवाह से हमें वास्तविक प्रवाह प्राप्त होते हैं तथा एक वर्ग से दूसरे वर्ग की ओर मुद्रा का प्रवाह हमें मौद्रिक प्रवाह प्रदान करता है।

उद्यमों और गृहस्थों के बीच वास्तविक एवं मौद्रिक प्रवाहों का अध्ययन किया जा सकता है। इस अध्ययन का विस्तार एक ऐसी अर्थव्यवस्था तक कर सकते हैं जहाँ उद्यम, गृहस्थ तथा पूँजी क्षेत्र होते हैं। इसी अध्ययन का आगे विस्तार करते हुए इसमें सरकारी क्षेत्र तथा शेष विश्व को भी शामिल किया जा सकता है। उद्यमों, गृहस्थों, पूँजी क्षेत्र, सरकारी क्षेत्र तथा शेष विश्व क्षेत्र – सभी को सम्मिलित करते हुए हम खुली अर्थव्यवस्था में प्रवाहों का अध्ययन करते हैं।

राष्ट्रीय आय का तीन स्वरूपों में अध्ययन किया जा सकता है। ये हैं :– वस्तुओं और सेवाओं का प्रवाह के रूप में, साधन आयों के प्रवाह के रूप में; और अंततः अंतिम व्ययों के रूप में। राष्ट्रीय आय के इन तीनों आयामों से एक–समान राष्ट्रीय आय का योग प्राप्त होता है।

इस इकाई के अंतिम भाग में हमने राष्ट्रीय आय तथा विभिन्न संबंधित अवधारणाओं का अध्ययन किया और उन अवधारणाओं के बीच अंतर्संबंधों से परिचित करवाया।

जिन प्रमुख अवधारणाओं से परिचय कराया गया है, वे हैं : बाज़ार मूल्यों का सकल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP_{MP}), बाज़ार कीमतों पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (GNP_{MP}), शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय (NNDY), घरेलू उत्पाद से निजी क्षेत्र को प्राप्त आय (Income from Domestic Product accruing to Private Sector), निजी आय (Private Income), वैयक्तिक आय (Personal Income), वैयक्तिक प्रयोज्य आय (Personal Disposable Income), वैयक्तिक बचतें (Personal Savings), सकल एवं निवल घरेलू पूँजी निर्माण दरें (Rate of Gross and Net Domestic Capital Formation), सकल एवं शुद्ध घरेलू बचत की दरें (Rate of Gross and Net Domestic Savings), और शुद्ध विदेशी पूँजी प्राप्तियाँ (Net foreign Capital Inflow)। इन अवधारणों के बीच अंतर्संबंधों को समझने का भी प्रयास किया गया है।

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) मौद्रिक प्रवाह वे होते है जो एक विनिमयकर्ता से दूसरे विनिमयकर्ताओं के बीच अथवा के एक वर्ग से दूसरे के बीच मुद्रा के रूप में होते हैं। उदाहरण के लिए उत्पादक वस्तुओं का उत्पादन करते हैं और उन्हें गृहस्थों को देते हैं, जिसके बदले में उत्पादकों को मुद्रा के रूप में भुगतान किया जाता है। दूसरी ओर, गृहस्थ उत्पादकों को साधन सेवाएँ प्रदान करते हैं और उत्पादक उनको पारितोषिक (साधन आय) प्रदान करते हैं। दूसरी ओर, वास्तविक प्रवाह है – वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादकों से गृहस्थों की ओर प्रवाह और गृहस्थों की ओर साधन सेवाओं का प्रवाह।

2) आर्थिक लेन–देनों की उत्पादन, आय सृजन, पूँजी स्टॉक में वृद्धि और शेष विश्व के साथ लेन–देन में वर्गीकृत किया जा सकता है। लेन–देनकर्ता उद्यम, गृहस्थ सरकार पूँजी क्षेत्र एवं शेष विश्व में विभाजित किए जाते हैं।

3) जब उद्यम और गृहस्थ क्षेत्र के साथ पूँजी क्षेत्र को भी चक्रीय प्रवाह में शामिल किया जाता है तो वह जटिल हो जाता है। यह जटिलता इसलिए होती है, वह उद्यमों द्वारा उत्पादि उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च कर दी जाए। उसका एक भाग गृहस्थों द्वारा बचत करके पूँजी क्षेत्र की ओर अंतरित कर दिया जाता है।

उसी प्रकार से उद्यम अपनी प्राप्तियों (जो उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री से प्राप्त होती है) का एक भाग घिसावट को एवं अवितरित लाभों के रूप में बचत के रूप में रखें।

वे बचतें जो गृहस्थों एवं फर्मों से पूँजी क्षेत्र को प्राप्त होती है, उनको उद्यमों को ऋण के रूप में प्रदान किया जाता है जिसका उपभाग वे पूँजीगत वस्तुओं (स्थिर पूँजीगत वस्तुएँ अथवा स्टॉक में परिवर्तन) के निवेश में लगा दें। इस प्रकार से बचत और निवेश को भी चक्रीय प्रवाह में शामिल किया जाता है।

बोध प्रश्न 2

1) उत्पादन प्रवाह से हमारा अभिप्राय है, एक वर्ष में एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन। वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए हमें साधन सेवाओं की आवश्यकता होती है जो उत्पादन के साधनों के प्रयोग से साधन आय यानी आय प्रवाह सृजित होता है।

साधन सेवाओं के बदले में गृहस्थों को प्राप्त साधन आयों को या तो उद्यमों द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने पर खर्च किया जाता है या बचत की जाती है। जो भी बचत होती है, वह बाद में अर्थव्यवस्था में पूँजी स्टॉक में वृद्धि (अथवा निवेश) के लिए प्रयुक्त होती है।

इस प्रकार उत्पादन प्रवाह, आय प्रवाह सृजित करता है और आय प्रवाह व्यव प्रवाह अथवा पूँजी स्टॉक में वृद्धि प्रवाह को सृजित करता है। यह प्रक्रिया सतत् रूप से चलती है क्योंकि उपभोग व्यय तथा पूँजीगत व्यय, उद्यमों को प्राप्त होते हैं, तथा फिर से उत्पादन प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है।

2) i) वर्तमान में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं को उपभोक्ता और सेवाओं एवं पूँजीगत अथवा निवेश वस्तुओं में वर्गीकृत किया जा सकता है। उत्पादित वस्तुएँ एवं सेवाएँ मध्यवर्ती प्रकृति की भी हो सकती है लेकिन वे ऊपर के दो वर्गों में नहीं रखी जाती क्योंकि ऐसे में एक अर्थव्यवस्था के सकल घरेलू उत्पाद में दोहरी गणना हो जाएगी।

ii) एक वर्ष में सृजित आयों का प्रचालन अधिशेष, कर्मचारियों का मुआवजा और स्व–रोजगार युक्त लोगों की मिश्रित आय में वर्गीकृत किया जा सकता है। प्रचालन अधिशेष में किराया, ब्याज एवं लाभ शामिल होते हैं। स्व–रोज़गार युक्त लोगों की मिश्रित आय साधन आयों को वह प्रकार है जहाँ प्रचालन अधिशेष तथा कर्मचारियों के मुआवज़े के बीच भेद करना संभव नहीं होता। एक अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय प्राप्त करने के लिए घरेलू तौर पर पर साधन आयों के विदेशों से निवल साधन आयों को भी जोड़ना होगा।

iii) चालू रूप से सृजित व्ययों को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है – (क) निजी अंतिम उपभोग व्यय (ख) सरकारी अंतिम उपभोग व्यय (ग) सकल घरेलू पूँजी निर्माण (घ) शेष विश्व को शुद्ध निर्यात।

उपरोक्त (क), (ख), (ग) एवं (घ) में से निवल अप्रत्यक्ष कर एवं घिसावट को घटाकर तथा विदेशों से शुद्ध साधन आय जमा करके हम एक अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय प्राप्त करते हैं।

3) किसी अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय के मापन के लिए उत्पाद, आय एवं व्यय तीन तरीके हैं। इन तीनों विधियों से प्राप्त राष्ट्रीय आय का योग एक समान है। भारत में राष्ट्रीय आय के मापन के लिए हम इन तीनों विधियों को मिला–जुलाकर उपयोग करते हैं। हम कृषि इत्यादि के लिए उत्पादन विधि, सेवा क्षेत्र के लिए आय विधि तथा निर्माण क्षेत्र के लिए व्यय विधि का उपयोग करते हैं।

हम इन तीनों विधियों का उपयोग इसलिए करते हैं क्योंकि विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध आँकड़ें भिन्न भिन्न है।

ऐसे क्षेत्र जहाँ उत्पादन आँकड़ें आसानी से उपलब्ध हैं, वहाँ हम उत्पादन विधि का उपयोग करते हैं। ऐसे क्षेत्र जैसे सेवाओं में सृजित आय के आँकड़ें आसानी से उपलब्ध होते हैं, इसलिए वहाँ राष्ट्रीय आय में उनके योगदान के लिए आय विधि का उपयोग होता है। निर्माण क्षेत्र में व्यय विधि का उपयोग होता है क्योंकि वहाँ व्यय के आँकड़े आसानी से उपलब्ध होते हैं।

बोध प्रश्न 3

1) व्यैक्तिक उपभोग व्यय + व्यैक्तिक बचतें – व्यैक्तिक प्रयोज्य आय

- व्यैक्तिक प्रयोज्य आय + प्रत्यक्ष व्यैक्तिक कर + सरकारी प्रशासकीय विभागों की छिटपुट प्राप्तियाँ = व्यैक्तिक आय
- व्यैक्तिक आय + निजी निगमों के अवितरित लाभ + निगम कर = निजी आय
- निजी आय – विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय – राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज – सरकार से अंतरण = घरेलू उत्पाद से निजी क्षेत्र को प्राप्त आय
- घरेलू उत्पाद से निजी क्षेत्र को प्राप्त आय + गैर–विभागीय सरकारी उद्यमों की बचतें + सरकारी प्रशासकीय विभागों को घरेलू उत्पाद से प्राप्त आय = साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद
- साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP_{FC}) + घिसावट = साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद

2) शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय – शुद्ध अप्रत्यक्ष कर – घरेलू उत्पाद से सरकारी प्रशासकीय विभागों को प्राप्त आय – गैर–विभागीय उद्यमों की बचत + राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज + सरकार से चालू अंतरण – अवितरित लाभ – निगम कर – प्रत्यक्ष व्यैक्तिक कर – सरकारी प्रशासकीय विभागों की छिटपुट प्राप्तियाँ = व्यैक्तिक प्रयोज्य आय

3) i) घिसावट

ii) विदेशों से शुद्ध साधन आय

iii) शुद्ध अप्रत्यक्ष कर + विदेशों से शुद्ध चालू अंतरण

iv) शुद्ध अप्रत्यक्ष कर

v) विदेशों से शुद्ध चालू अंतरण

ivi) प्रत्यक्ष वैयक्तिक कर + सरकारी प्रशासकीय विभागों की छिटपुट प्राप्तियाँ।

इकाई 3 आर्थिक निष्पादन के माप*

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 राष्ट्रीय आय मापने की विधियाँ

3.2.1 व्यय विधि

3.2.2 आय विधि

3.2.3 मूल्य वर्धित विधि

3.3 समग्र बचत तथा धन (सम्पत्ति) के माप

3.4 वास्तविक तथा मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद

3.5 सकल घरेलू उत्पाद की सीमाएँ

3.6 भुगतान शेष : खुली अर्थव्यवस्था के लिए राष्ट्रीय आय लेखांकन

3.6.1 चालू खाता

3.6.2 पूँजी खाता

3.7 सार संक्षेप

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- राष्ट्रीय आय के माप की विभिन्न विधियों का वर्णन कर सकेंगे;
- बचत तथा धन के मध्य अन्तर कर सकेंगे;
- वास्तविक तथा मौद्रिक आय के बीच अंतर कर सकेंगे; और
- एक अर्थव्यवस्था के भुगतान शेष की अवधारणा का वर्णन कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हम राष्ट्रीय आय लेखांकन की विभिन्न अवधारणाओं की चर्चा कर चुके हैं। इस इकाई में हम राष्ट्रीय आय को मापने की विधियों की चर्चा करेंगे। राष्ट्रीय आय का मापन इस अर्थ में लेखा ढाँचे में निष्पादित किया जाता है कि राष्ट्रीय आय में सम्मिलित की जाने वाली प्रत्येक मद से जुड़ी एक आर्थिक क्रिया होती है। राष्ट्रीय आय एक प्रवाह है तथा यह एक विशिष्ट समयावधि के लिए मापी जाती है, सामान्यतः एक वर्ष के लिए। हाल ही के समय में, कुछ समग्रों जैसे सकल घरेलू उत्पाद को त्रैमासिक आधार पर मापा जाता है। राष्ट्रीय आय को निम्नलिखित पदों के रूप में मापा जाता हैः

1) आर्थिक अभिकर्त्ताओं के द्वारा अन्तिम उत्पादन की खरीद द्वारा खर्च की गई राशि (व्यय दृष्टिकोण)
2) उत्पादन के साधनों द्वारा प्राप्त आय (आय दृष्टिकोण)
3) उत्पादित अन्तिम उत्पाद की मात्रा (उत्पाद दृष्टिकोण)

* डॉ० सरबजीत कौर, ज़ाकिर हुसैन कॉलेज(संध्या), दिल्ली विश्वविद्यालय

तीनों विधियाँ आर्थिक क्रियाओं को देखने के तीन अलग–अलग दृष्टिकोण प्रदान करती हैं लेकिन ये एक अर्थव्यवस्था में तात्कालिक आर्थिक क्रियाओं के समान माप प्रदान करते हैं।

3.2 राष्ट्रीय आय मापने की विधियाँ

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि राष्ट्रीय आय को मापने की तीन विधियाँ हैं। हम नीचे विस्तार से प्रत्येक विधि का वर्णन करते हैं।

3.2.1 व्यय विधि

एक दी गई समयावधि के दौरान घटित होने वाली आर्थिक क्रियाओं की मात्रा को अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय की जाने वाली राशि के पद में मापा जा सकता है। आपको ध्यान देना चाहिए कि इस विधि में पुनः बिक्री के लिए खरीदी गई वस्तुओं पर व्यय सम्मिलित नहीं किया जाता है। इस विधि के अनुसार, आर्थिक क्रिया को दर्शाने के लिए बाजार कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद पर अन्तिम व्यय को शामिल किया जाता है। इस विधि के अंतर्गत, निजी उपभोग व्यय (Private Consumption Expenditure - C), निजी निवेश व्यय (Private Investment Expenditure – I), सरकारी व्यय (Government Expenditure - G) तथा विशुद्ध विदेशी व्यय अथवा विशुद्ध निर्यात (Net Foreign Expenditure Or Net Export (NX) सकल घरेलू उत्पाद के घटक हैं। अतः इस विधि में, अर्थव्यवस्था के अन्तिम व्यय को प्राप्त करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों यथा घरेलू, व्यावसायिक, सरकारी तथा शेष विश्व के द्वारा किए गए व्यय को एक साथ शामिल किया जाता है। इस विधि के अनुसार, बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (Y) एक वित्तीय वर्ष के दौरान एक अर्थव्यवस्था में सभी अन्तिम व्यय का योग है, जिसे निम्नांकित आय–व्यय सर्वसमिका (Income- Expenditure Identity) के द्वारा प्रदर्शित किया गया है:

$$Y = C + I + G + NX$$

सकल घरेलू उत्पाद से विभिन्न समष्टिगत समग्रों को प्राप्त करने की प्रक्रिया की इकाई 2 में चर्चा की गई है। हम सकल घरेलू उत्पाद के घटकों पर निम्न प्रकार से चर्चा करते हैं:

1. **उपभोग**

   उपभोग व्यय घरेलू क्षेत्र के द्वारा किया जाता है। यह एक वित्तीय वर्ष के दौरान अन्तिम उपयोगकर्त्ताओं के द्वारा बेची गई वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय को शामिल करता है। यह टिकाऊ वस्तुओं जैसे कार, फर्नीचर, इत्यादि तथा ग़ैर–टिकाऊ वस्तुओं जैसे भोजन, ईंधन, इत्यादि एवं सेवाओं जैसे बैंकिंग, स्वास्थ्य इत्यादि को समाहित करते हैं।

2. **निवेश**

   वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन के लिए व्यावसायिक फर्मों द्वारा साधनों में निवेश किया जाता है। यह व्यावसायिक स्थिर निवेश आवासीय निवेश एवं माल सूची निवेश अथवा स्टॉक में परिवर्तन को शामिल करता है।

3. **सरकारी व्यय**

   यह व्यय स्थानीय, राज्य एवं केन्द्रीय स्तर पर सरकारों द्वारा किया जाता है सरकार अपने कर्मचारियों के वेतन, सामाजिक सुरक्षा लाभों जैसे चिकित्सा लाभ, बेरोजगारी भत्ता इत्यादि के लिए व्यय का भुगतान करती है।

4. **विशुद्ध निर्यात**

विशुद्ध निर्यात को निर्यात एवं आयात के अन्तर के रूप में परिभाषित किया जाता है। निर्यात को विदेशियों द्वारा घरेलू स्तर पर उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय के रूप में देखा जा सकता है जबकि आयात घरेलू निवासियों के द्वारा विदेशी वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय होता है। जब निर्यात का मूल्य आयात के मूल्य से अधिक होता है तब विशुद्ध निर्यात धनात्मक होता है तथा इसका उल्टा भी।

व्यय विधि में निम्नलिखित सावधानियाँ अपनाई जानी चाहिएः

1. 'दोहरी गणना' की समस्या से बचने के लिए राष्ट्रीय आय में केवल अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य को शामिल किया जाना चाहिए।
2. राष्ट्रीय आय में पूर्व प्रयुक्त वस्तुओं की बिक्री एवं खरीद को शामिल नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि इन वस्तुओं को पहले से ही राष्ट्रीय आय में शामिल किया जा चुका है जिस समय इनका उत्पादन हुआ था। लेकिन इस प्रकार की वस्तुओं की बिक्री की सुविधा के लिए दलाली (कमीशन), एवं ब्रोकरेज एक तात्कालिक क्रिया है तथा इसे शामिल किया जाना चाहिए।
3. खुद काबिज मकान का आरोपित मूल्य शामिल किया जाना चाहिए।
4. उद्यम, परिवारों तथा सरकार तथा अचल पूँजी के स्व लेखा के मूल्य को शामिल किया जाना चाहिए।

उदाहरण 3.1: निम्न आँकड़ों से सकल घरेलू उत्पाद की गणना कीजिएः

मदें	मूल्य (करोड़ रुपए में)
1. व्यक्तिगत उपभोग व्यय	45000
2. सरकारी उपभोग व्यय	5000
3. सकल घरेलू स्थिर निवेश	5000
4. मालसूची में वृद्धि	1000
5. वस्तुओं एवं सेवाओं का निर्यात	6000
6. वस्तुओं एवं सेवाओं का आयात	7000
7. विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर	3500
8. मूल्यह्रास	4500

हलः

सकल घरेलू उत्पाद = 1 + 2 + 3 + 4 + 5 – 6

= 45000 + 5000 + 5000 + 1000 + 6000 – 7000 = 55,000 करोड़ रुपए

3.2.2 आय विधि

उत्पाद का मूल्य उत्पादन के साधनों को किए गए भुगतान के बराबर है। सामान्यतः चार उत्पादन के साधनों भूमि, श्रम, पूँजी तथा उद्यमी हैं, जिन्हें क्रमशः किराया, मजदूरी, ब्याज तथा लाभ के रूप में पारिश्रमिक दिया जाता है। इस विधि के अनुसार, राष्ट्रीय आय को सभी उत्पादन के साधनों को किए गए भुगतानों के पदों में मापा जाता है।

अतः इस दृष्टिकोण के आधार पर, कर्मचारियों का पारिश्रमिक, सकल प्रचालन अधिशेष, मिश्रित आय तथा विशुद्ध अप्रत्यक्ष करों का योग, बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद

है, जो उत्पादन तथा आयात पर करों तथा उत्पादन पर प्रतिदान (आर्थिक सहायता) का अन्तर है। आय पक्ष दृष्टिकोण उत्पादन प्रक्रिया में सकल घरेलू उत्पाद के लिए विभिन्न साधनों के योगदान को दिखाता है।

1) **कर्मचारियों का पारिश्रमिकः** यह मजदूरी, वेतन, कर्मचारी लाभ जैसे नियोक्ता की पेंशन, सामाजिक सुरक्षा इत्यादि में योगदान का समावेश करता है। यह लेखांकन अवधि के दौरान नियोक्ता द्वारा कर्मचारियों को श्रम के लिए नकद या वस्तु रूप में दिए जाने वाला कुल पारिश्रमिक होता है। यह मजदूरी तथा वेतन (नकद या वस्तु रूप में) एवं नियोक्ता के सामाजिक अंशदान में विभाजित किया जाता है।

2) **सकल प्रचालन अधिशेष** : यह किराया, ब्याज, रॉयल्टी एवं लाभ के रूप में सम्पत्ति एवं प्रतिष्ठानों से उत्पादन प्रक्रिया के दौरान विशुद्ध व्यावसायिक आय है। लाभ में लाभांश, निगम करों एवं प्रतिधारित आय को शामिल किया जाता है। केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन (Central Statistical Office - CSO) "कुल उत्पादन के मूल्य में से मध्यवर्ती उपभोग, कर्मचारियों का पारिश्रमिक (स्व–नियोजित की श्रम आय का शामिल करते हुए), स्थिर पूँजी के उपभोग एवं विशुद्ध अप्रत्यक्ष करों के योग के अन्तर" के रूप में प्रचालन अधिशेष को परिभाषित किया जाता है। इस प्रकारः

सकल प्रचालन अधिशेष = किराया + ब्याज + रॉयल्टी + लाभ
= बाजार कीमत पर उत्पादन का मूल्य – मध्यवर्ती उपभोग – कर्मचारियों का पारिश्रमिक – स्थिर पूँजी उपभोग – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

3) **स्व–नियोजित की आयः** यह एक अनिगमित उद्यमों के मालिक अथवा मालिकों के परिवारों के द्वारा निष्पादित कार्य के लिए पारिश्रमिक है, जिसे मिश्रित आय भी कहा जाता है। पूँजी आय, श्रम आय लाभों की संयुक्त आय के रूप में अर्जित मिश्रित आय मालिक की आय (पूँजी, भूमि तथा कौशल के स्वामी (मालिक)) होती है। इस समूह की आय को मिश्रित आय के रूप में संदर्भित किया जाता है क्योंकि यह स्पष्ट नहीं है जो उनकी आय का अनुपात मजदूरी अथवा लाभ के समान है। मिश्रित आय प्रचालन अधिशेष से इस अर्थ में अलग है कि स्वनियोजितों के पूर्ववर्तीय उपलब्ध हैं, जबकि बाद में, निगम तथा अर्ध–निगम उद्यमों का उपार्जित होता है।

4) **उत्पादन तथा आयातों पर कर से उत्पादन पर प्रतिदानों का अन्तरः** भारत में पूर्ववर्ती अनिवार्य, गैर–वापसी भुगतानों या सामान्य सरकार अथवा संस्थानों से मिलकर बना होता है, वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन तथा आयात के सम्बन्ध में श्रम का रोजगार, तथा स्वामित्व अथवा भूमि का प्रयोग, उत्पादन में प्रयोग की गई इमारतों अथवा अन्य परिसम्पत्तियाँ। उत्तरार्द्ध में सभी प्रतिदान शामिल होते हैं जो केवल उत्पादन पर उन प्रतिदानों को छोड़कर जिन्हें घरेलू उत्पादक इकाइयाँ उत्पादन प्रक्रिया में संलग्न होने के कारण प्राप्त कर सकती हैं।

5) आय विधि में निम्नलिखित सावधानियाँ शामिल होनी चाहिएः
आय विधि के द्वारा राष्ट्रीय आय का सही आकलन करने के लिए निम्नलिखित सावधानियाँ लेनी होंगीः
   1) हस्तांतरण भुगतानों को शामिल नहीं किया जाना चाहिए।
   2) आकस्मिक लाभों जैसे लाटरियों से आय, राष्ट्रीय आय का भाग नहीं होना चाहिए।

3) अवैध कार्यों से प्राप्त आय (जैसे चोरी, तस्करी, इत्यादि) को सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए।

4) राष्ट्रीय आय में पुरानी वस्तुओं की बिक्री एवं खरीद से प्राप्त आय को शामिल नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन इस प्रकार की वस्तुओं की बिक्री की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए कमीशन तथा ब्रोकरेज के लिए किए गए भुगतान को शामिल किया जाना चाहिए।

5) धन कर, सम्पत्ति कर, उपहार कर को वर्तमान आय से भुगतान नहीं किया जाता है, इसलिए इन्हें राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाना चाहिए।

6) स्वयं के मकानों का आरोपित किराया शामिल किया जाना चाहिए।

7) स्व–उपभोग के लिए उत्पादन के मूल्य को शामिल किया जाना चाहिए।

बोध प्रश्न 1

1) व्यय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय आकलन में शामिल चरणों की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) राष्ट्रीय आय के आकलन में आय विधि, व्यय विधि से किस प्रकार भिन्न है? वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3.2.3 मूल्य वर्धित विधि (Value-Added Method)

इस विधि को उत्पादन विधि अथवा उत्पाद विधि से भी जाना जाता है। यह एक वित्तीय वर्ष में अर्थव्यवस्था की घरेलू सीमाओं में उत्पादन प्रक्रिया में प्रत्येक उत्पादक उद्यम के द्वारा किए गए योगदान को मापता है। मध्यवर्ती उत्पादन चरण में उपयोग की गई किसी भी वस्तुओं एवं सेवाओं को छोड़कर यह विधि उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के बाजार कीमत के योग के द्वारा आर्थिक क्रियाओं को मापती है। इस विधि के अंतर्गत, हम बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद को प्राप्त करने के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन के विभिन्न क्षेत्रों द्वारा मूल्य वर्धन को जोड़ते हैं। प्रत्येक फर्म का मूल्य वर्धन इसके उत्पादन के मूल्य तथा अन्य फर्मों से क्रय की गई मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य का अन्तर होता है। दूसरे शब्दों में, यह वस्तुओं के विभिन्न चरणों पर मध्यवर्ती वस्तुओं से अन्तिम उत्पाद के मूल्य के अतिरिक्त है।

सकल मूल्य वृद्धि = सकल उत्पादन – मध्यवर्ती उपभोग
विशुद्ध मूल्य वृद्धि = सकल उत्पादन – मध्यवर्ती उपभोग – मूल्यह्रास
साधन लागत पर विशुद्ध मूल्य वृद्धि = NVA_{FC} = सकल उत्पादन – मध्यवर्ती उपभोग – मूल्यह्रास – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

घरेलू आय (NVA_{FC}) में विदेशों से विशुद्ध साधन लागत के योग द्वारा, हम राष्ट्रीय आय (साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन – NNP_{FC}) प्राप्त करते हैं, अर्थात्

राष्ट्रीय आय अथवा NNP_{FC} = सकल उत्पादन – मध्यवर्ती उपभोग – मूल्यह्रास – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर + विदेशों से विशुद्ध साधन आय

यह विधि विभिन्न चरणों में राष्ट्रीय आय को मापती है। मूल्य वर्धन का मुख्य लाभ यह है कि यह दोहरी गणना की समस्या की अवहेलना करता है।

उपर्युक्त तीनों विधियों द्वारा आकलित राष्ट्रीय आय अर्थात् आय विधि, व्यय विधि तथा मूल्य वर्धित विधि समान हैं, अर्थात्

राष्ट्रीय आय ≡ राष्ट्रीय उत्पाद ≡ राष्ट्रीय व्यय

(जहाँ ≡ सर्वसमिका को दिखाता है)।

मूल्य वृद्धि का आकलन

पद मूल्य वृद्धि उत्पादन इकाई द्वारा उत्पादन में प्रयोग किए गए मध्यवर्ती साधनों में जोड़े गए मूल्यों को संदर्भित करता है। मूल्य वृद्धि, उत्पादन के मूल्य तथा मध्यवर्ती साधनों की लागत के मध्य अन्तर है।

एक उदाहरण की सहायता से मूल्य वृद्धि की अवधारणा की व्याख्या करते हैं।

माना एक कपड़ा फर्म ने कपड़ों का निर्माण करने के लिए 4,000 रुपये मूल्य का कच्चा माल खरीदा तथा 1,000 रुपये मूल्य का श्रम मजदूरी पर रखा। मध्यवर्ती साधनों को 50,000 रुपये में खरीदा। कपड़ा फर्म ने अपने कपड़े के उत्पादन को 55,000 रुपये में बेच दिया। इस प्रकार कपड़ा फर्म के द्वारा मूल्य वृद्धि 5,000 रुपए है।

उत्पाद विधि में शामिल सावधानियाँ:

आय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना के लिए निम्नलिखित सावधानियाँ लेने की आवश्यकता है:

1. केवल साधन आय जो उत्पादकीय सेवाओं के प्रदान के द्वारा अर्जित की गई हैं को शामिल किया जाना चाहिए।
2. अवैध स्रोतों (जैसे तस्करी, चोरी इत्यादि) से अर्जित आय को पृथक किया जाना चाहिए।
3. पुरानी वस्तुओं की बिक्री तथा क्रय के माध्यम से अर्जित आय को राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन इस तरह की वस्तुओं की बिक्री को सुविधाजनक बनाने के लिए दिया गया कमीशन तथा दलाली का भुगतान शामिल होना चाहिए।
4. खुद–काबिज भवनों (इमारतों) का आरोपित किराया शामिल किया जाना चाहिए। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई मकान किराए पर है या स्वयं द्वारा उपयोग किया जाता है।
5. स्व उपभोग के लिए उत्पादन का मूल्य शामिल किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक किसान स्व उपभोग के लिए उसके द्वारा उत्पादित उत्पादन का एक भाग रखता है। यह बाजार में नहीं लाया जाता है, लेकिन यह उत्पादन में योगदान देता है।
6. परिवार के सदस्यों (घर में बनाने वालों को भोजन पकाने के लिए कहना) द्वारा घरेलू कार्यों को राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता है।

दूसरी तरफ, वही भोजन यदि घरेलू सहायता (इसके लिए जिसको भुगतान किया जाता है) द्वारा बनाया जाता है तो उसको सकल घरेलू उत्पाद में शामिल किया जाता है।

उदाहरण 3.2: साधन लागत पर विशुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP_{FC}) की गणना निम्नलिखित आँकड़ों से कीजिए।

मदें	मूल्य (करोड़ रुपए में)
कच्चे माल की खरीद	300
मूल्यह्रास	120
बिक्री	2000
उत्पादन शुल्क	200
आरम्भिक स्टॉक	150
मध्यवर्ती उपभोग	480
अन्तिम स्टॉक	100

हल:

उत्पादन का मूल्य = बिक्री + स्टॉक में परिवर्तन

स्टॉक में परिवर्तन = अन्तिम स्टॉक – आरम्भिक स्टॉक

= 100 – 150= –50

अतः उत्पादन का मूल्य = 2000 + (–50)

= 1950 करोड़ रुपए

सकल मूल्य वृद्धि = उत्पादन का मूल्य – मध्यवर्ती उपभोग

= 1950 – 480 = 1470 करोड़ रुपए

NDP_{FC} = सकल मूल्य वृद्धि – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

NDP_{FC} = 1470 – 200 = 1270 करोड़ रुपए

उदाहरण 3.3:

एक फर्म दूसरी फर्मों से 80,000 रुपए के फल खरीद कर उनसे जैम बनाती है और जैम को बाजार में बेचती है। वह अपने श्रमिकों को मजदूरी के रूप में 50,000 रुपए का भुगतान करती है, कर के रूप में 20,000 रुपए का भुगतान करती है तथा उसका लाभ 40,000 रुपए है। इसका अपनी मूल्य वृद्धि क्या है?

हल:

मदें	मूल्य (रुपए में)
दूसरी फर्मों से खरीदे गए फलों का मूल्य	80,000
श्रमिकों को मजदूरी के रूप में किया गया भुगतान	50,000
करों का भुगतान	20,000
लाभ	40,000

लाभ = बिक्री आगम – मजदूरी का भुगतान – कर – मध्यवर्ती उपभोग

40,000 = बिक्री आगम – 50,000 – 20,000 – 80,000

बिक्री आगम = 40000 + 50000 + 20000 + 80000

= 1,90,000 रुपए

मूल्य वृद्धि = बिक्री – मध्यवर्ती उपभोग

= 1,90,000 – 80,000 = 1,10,000 रुपए

अतः मूल्य वृद्धि = 1,10,000 करोड़ रुपए

बोध प्रश्न 2

1) राष्ट्रीय आय मापन में दोहरी गणना की समस्या का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) मूल्य वर्धित विधि द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना के दौरान अपनाई जाने वाली सावधानियाँ क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

3.3 समग्र बचत तथा धन (सम्पत्ति) के माप

बचत तथा धन एक–दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं, लेकिन ये समान नहीं हैं। बचत आय का वह भाग है जिसे खर्च नहीं किया जाता है। दूसरे शब्दों में, बचत वर्तमान आय में से वर्तमान आवश्यकताओं पर खर्च का अन्तर है। जब हम एक देश की कुल बचत को उसकी राष्ट्रीय आय से विभाजित करते हैं तब हम बचत अनुपात प्राप्त करते हैं। दूसरी तरफ, धन की परिसम्पत्ति से दायित्वों के अंतर के रूप में गणना की जाती है। बचत, प्रवाह अवधारणा (समय की प्रति इकाई में मापा जाता है) है जबकि धन एक स्टॉक अवधारणा (समय के एक बिन्दु पर मापा जाता है) है। बचत को परिसम्पत्ति के संचय के रूप में अथवा देयता में कमी के रूप में लेते हैं; इसलिए बचत धन का योग है।

बचत के तीन महत्वपूर्ण माप निम्नलिखित हैं:

1. **निजी बचत (Private Saving - S_{pvt})** : यह निजी क्षेत्र द्वारा बचत है। निजी बचत निजी खर्च योग्य आय से उपभोग का अन्तर है। प्रतीकात्मक रूप से,

S_{pvt} = निजी खर्च योग्य आय – उपभोग

= (Y + NFPA – T + TR + INT) – C

जहाँ, Y = सकल घरेलू उत्पाद

NFPA = विदेशों से शुद्ध साधन भुगतान (Net factor payments from aboard)

T = कर (Taxes)

TR = सरकार से प्राप्त हस्तांतरण आय (Transfer earnings received from government)

INT = ब्याज आय (Interest income)

निजी बचत अनुपात = निजी बचत / निजी खर्च योग्य आय

2. सरकारी बचत **(Government Saving - S_{govt})**: यह विशुद्ध सरकारी अथवा बजट आधिक्य है। यह सरकारी आय का वस्तुओं एवं सेवाओं पर सरकारी व्यय पर आधिक्य है, अर्थात् बचत

S_{govt} = सरकारी आय – वस्तुओं एवं सेवाओं की सरकारी खरीद

$S_{govt} = (T - TR - INT) - G$

जहाँ,

T = कर

TR = हस्तांतरण भुगतान

INT = ब्याज भुगतान

G = वस्तुओं एवं सेवाओं की सरकारी खरीद

3. **राष्ट्रीय बचत (National Saving - S)**: राष्ट्रीय बचत एक अर्थव्यवस्था की संपूर्ण बचत है। यह निजी बचत तथा सरकारी बचत का योग है।

$$S = S_{pvt} + S_{govt}$$
$$S = [Y + NFPA - T + TR + INT - C] + [T - TR - INT - G]$$
$$= Y + NFPA - C - G$$
$$= GNP - C - G$$

उपर्युक्त समीकरण दिखाता है कि राष्ट्रीय बचत सकल राष्ट्रीय उत्पाद का निजी तथा सरकारी क्षेत्रों की वर्तमान आवश्यकताओं पर आधिक्य के समान है।

हम जानते हैं कि:

GNP अथवा $Y = C + I + G + NX$

Y का मूल्य राष्ट्रीय बचत समीकरण में रखने पर, हम प्राप्त करते हैं:

$$S = [C + I + G + NX] + NFPA - C - G$$
$$S = I + NX + NFPA$$
$$S = I + CA$$

जहाँ, $CA = NX + NFPA$; अर्थात चालू खाता शेष है।

इसके साथ ही,

$S = S_{pvt} + S_{govt}$

और $S_{pvt} = S - S_{govt}$

$= I + CA - S_{govt}$ (जहाँ $S = I + CA$)

अतः निजी बचत तीन तरीके से उपयोग की जा सकती है:

1. नवीन पूँजी निवेश (I) को कोष उपलब्ध कराना;
2. सरकारी बचत (S_{govt}) घाटे के लिए वित्त उपलब्ध कराना
3. परिसम्पत्ति अर्जन अथवा विदेशियों को ऋण देना।

3.4 वास्तविक तथा मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद

मौद्रिक चरों की गणना उनकी प्रचलित कीमत पर की जाती है तथा वास्तविक चरों की गणना आधार वर्ष पर मौद्रिक चरों को मुद्रा–स्फीति अथवा विस्फीति से समायोजित करके

की जाती है। आधार वर्ष अथवा स्थिर वर्ष का चयन सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। मौद्रिक चर में परिवर्तन, मात्रा में परिवर्तन तथा कीमत में परिवर्तन दोनों (संयुक्त) प्रभावों को प्रदर्शित करता है जबकि वास्तविक चर, चर परिवर्तन अथवा मात्रा में परिवर्तन की सही तस्वीर उपलब्ध कराता है।

वास्तविक सकल घरेलू उत्पादः इसे मौद्रिक राष्ट्रीय आय भी कहा जाता है तथा प्रचलित वर्ष की कीमतों पर वस्तुओं एवं सेवाओं को प्रचलित वर्ष की कीमतों पर वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह आर्थिक वृद्धि को मापने का अपर्याप्त (खराब) संकेतक है। यह प्रचलित वर्ष में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं को प्रचलित वर्ष की कीमतों के गुणनफल के द्वारा प्राप्त किया जाता है। वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद अथवा स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद अर्थव्यवस्था की वास्तविक वृद्धि को मापता है। यह प्रचलित वर्ष में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं को आधार वर्ष की कीमतों के गुणनफल से प्राप्त किया जाता है। वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि काल पर्यन्त अर्थव्यवस्था के निष्पादन में सुधार को इंगित करता है को बताता है। यह मात्रा में परिवर्तन को प्रदर्शित करता है।

$$\text{स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद} = \frac{\text{प्रचलित कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद}}{\text{प्रचलित वर्ष के लिए कीमत सूचकांक}} \times \text{आधार वर्ष कीमत सूचकांक}$$

जहाँ, आधार वर्ष = आधार वर्ष का कीमत सूचकांक हमेशा 100 लिया जाता है।

उदाहरण 3.4: मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद को वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में रूपांतरित कीजिए।

i) प्रचलित वर्ष की कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद 2,50,000 रुपए है तथा प्रचलित वर्ष के लिए कीमत सूचकांक 250 रुपए है।

ii) प्रचलित वर्ष की कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद 4,00,000 रुपए है तथा प्रचलित वर्ष के लिए कीमत सूचकांक 400 रुपए है।

हलः

i) स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद $= \frac{2,50,000}{250} \times 100 =$ 1,00,000 रुपए

ii) स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद $= \frac{4,00,000}{400} \times 100 =$ 1,00,000 रुपए

3.4.1 कीमत सूचकांक

आधार वर्ष की कीमतों के सापेक्ष, एक कीमत सूचकांक विशिष्ट वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमत के औसत स्तर को मापता है। दूसरे शब्दों में, यह आधार वर्ष के सापेक्ष प्रचलित कीमत स्तर का एक माप है।

मुख्य रूप से दो कीमत सूचकांक हैं:

1. सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीतिकारक (GDP Deflator)
2. उपभोक्ता कीमत सूचकांक (Consumer Price Index - CPI)

सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीतिकारक

सकल घरेलू उत्पाद में सम्मिलित की गई वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतों के औसत स्तर को मापता है। यह मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद से वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में

रूपांतरित करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। यह मूल्य वृद्धि के प्रभाव को हटाता है तथा यह भौतिक उत्पाद में वास्तविक परिवर्तन को निर्धारित करता है। यह दिए गए वर्ष में मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद का वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद से अनुपात है। दूसरे शब्दों में, यह बास्केट परिवर्तन के साथ एक कीमत सूचकांक है। प्रतीकात्मक रूप में,

$$\text{सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीति कारक} = \frac{\text{मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद}}{\text{वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद}} \times 100$$

उदाहरणः यदि मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद 21,100 करोड़ रुपए है तथा वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद 20,000 करोड़ रुपए है, तब

$$\text{सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीति कारक} = \frac{21,1000}{20,000} \times 100 = 105.5$$

हम सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीति कारक के उपयोग के द्वारा मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद में परिवर्तित कर सकते हैं, अर्थात्:

$$\text{वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद} = \frac{\text{मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद}}{\text{सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीति कारक}} \times 100$$

उपभोक्ता कीमत सूचकांक (Consumer Price Index - CPI)

उपभोक्ता कीमत सूचकांक उपभोक्ता वस्तुओं एवं सेवाओं के स्थिर (निष्चित) बॉस्केट की खरीद कीमतों को मापता है। बॉस्केट में वस्तुओं एवं सेवाओं की निष्चित सूची जैसे भोजन कपड़ा, ईंधन तथा घर को रखा जाता है। उपभोक्ता कीमत सूचकांक की मासिक आधार पर गणना की जाती है। जब सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीतिकारक बॉस्केट में परिवर्तन के साथ कीमत सूचकांक है। उपभोक्ता कीमत सूचकांक की गणना आधार अवधि में उसी बॉस्केट की मदों की लागत द्वारा उपभोक्ता मदों के बॉस्केट के प्रचलित लागत के भागफल द्वारा की जाती है। उपभोक्ता कीमत सूचकांक एक एकल सूचकांक है जिसे एक अर्थव्यवस्था में प्रचलित विभिन्न वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतों को मापने में उपयोग किया जा सकता है।

$$\text{उपभोक्ता कीमत सूचकांक} = \frac{\text{प्रचलित वर्ष में बॉस्केट की कीमत}}{\text{आधार वर्ष में बॉस्केट की कीमत}} \times 100$$

मुद्रा स्फीति दर (Inflation Rate)

मुद्रा स्फीति की दर वह है जिस पर कीमतों का सामान्य स्तर प्रति अवधि बढ़ता है। मुद्रा स्फीति दर को मापने के लिए कीमत सूचकांक का उपयोग किया जा सकता है। इसे किसी अवधि में प्रतिशत परिवर्तन के रूप में मापा जा सकता है। इसकी गणना इस प्रकार की जाती है।

$$\text{मुद्रा स्फीति दर} = \frac{P_2 - P_1}{P_1} \times 100$$

जहाँ, P_1 पूर्व अवधि में कीमत सूचकांक का मूल्य है तथा P_2 प्रचलित अवधि में कीमत सूचकांक का मूल्य है।

यदि सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीति कारक पूर्व अवधि में 100 से बढ़कर प्रचलित अवधि में 112 हो जाता है तब मुद्रा स्फीति दर की गणना इस प्रकार की जाती हैः

मुद्रा स्फीति दर = $\frac{112-100}{100} \times 100 = 12\ \%$

3.5 सकल घरेलू उत्पाद की सीमाएँ

सकल घरेलू उत्पाद आर्थिक प्रगति का एक उपयोगी माप है, लेकिन आर्थिक कल्याण का नहीं। परन्तु आर्थिक प्रगति के माप के रूप में सकल घरेलू उत्पाद की निष्चित सीमाएँ हैं, प्रमुख सीमाएँ इस प्रकार हैं:

1) **सकल घरेलू उत्पाद के संघटक:** यदि सकल घरेलू उत्पाद युद्ध उत्पादों (उदाहरण के लिए, टैंक, बॉम्ब, हथियार इत्यादि) के उत्पादन में वृद्धि के कारण बढ़ता है तब आर्थिक कल्याण नहीं बढ़ेगा।

2) **जनसंख्या प्रभाव की अवहेलना की जाती है:** एक देश की राष्ट्रीय आय उच्च हो सकती है लेकिन देश की उच्च जनसंख्या भी हो सकती है।

3) **कुछ लोगों के द्वारा अधिक योगदान:** देश में बहुत विषमता हो सकती है, सकल घरेलू उत्पाद उच्च हो सकता है लेकिन इसमें कुछ लोगों के द्वारा योगदान हो सकता है। इसलिए, यदि जनसंख्या का एक छोटा सा हिस्सा सकल घरेलू उत्पाद में उच्च हिस्सा रखता है और बचा हुआ सकल घरेलू उत्पाद का हिस्सा अधिक लोगों के द्वारा पूरा किया जाता है, तब आर्थिक विकास एक अर्थव्यवस्था के गरीबतम तबके तक नहीं पहुँच पाएगा।

4) **सकल घरेलू उत्पाद पर्यावरण की गुणवत्ता की अवहेलना करता है:** उत्पादन पर्यावरण में गिरावट में वृद्धि के साथ बढ़ सकता है। उच्च सकल घरेलू उत्पाद होने का तात्पर्य यह नहीं है कि लोगों के जीवन की गुणवत्ता बेहतर है अगर पानी, हवा आदि अधिक प्रदूषित हैं।

5) **केवल वैध उत्पाद शामिल हैं:** सकल घरेलू उत्पाद वैध बाजारों में वस्तुओं एवं सेवाओं को उत्पादित किया जाता है तथा बेचा जाता है को शामिल करता है जिनका बाजार में लेनदेन नहीं होता है, यह निष्चित उत्पादकीय कार्यों की भी अवहेलना करता है। उदाहरण के लिए, घर में कार्य करने की सेवाएँ, अपने बच्चों की देखभाल करने तथा परिवार के अन्य सदस्यों की देखभाल करने को सकल घरेलू उत्पाद से अलग रखा जाता है।

उपर्युक्त विचारों में, सकल घरेलू उत्पाद सामाजिक तथा आर्थिक कल्याण का एक पर्याप्त सूचकांक नहीं हो सकता है। सकल घरेलू उत्पाद तथा कल्याण धनात्मक रूप से सम्बन्धित नहीं हो सकते हैं। कई स्थितियों में, सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि आर्थिक कल्याण में वृद्धि नहीं करता है।

बोध प्रश्न 3

1) बचत के घटक क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

2) वास्तविक तथा मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद के मध्य अन्तर का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3.6 भुगतान शेष : खुली अर्थव्यवस्था के लिए राष्ट्रीय आय लेखांकन

एक देश का भुगतान शेष एक विशिष्ट समयावधि सामान्यतः एक वर्ष अथवा एक वर्ष की तिमाही में देश के निवासियों एवं शेष विश्व के मध्य सभी आर्थिक लेनदेनों का विवरण है। भुगतान शेष एक देश तथा शेष विश्व के मध्य समस्त मौद्रिक लेनदेनों का सार है, जो व्यक्तिगत, फर्मों तथा सरकारी निकायों के द्वारा बना होता है।

इस प्रकार, भुगतान संतुलन (शेष) समस्त बाह्य दृश्य तथा अदृश्य लेनदेनों का विवरण रखता है। भुगतान शेष एक खाता है (i) जो किसी देश के निवासियों को वस्तुओं एवं सेवाओं एवं अन्य अदृश्य मदों की बिक्री के एक विशिष्ट आवधिक खाते में शेष विश्व से प्राप्त करता है, (ii) अन्य देशों से पूँजी हस्तांतरण, (iii) जो इन निवासियों ने उन सभी मदों की खरीदों के आधार पर दूसरे देशों को भुगतान किया है, तथा (iv) शेष विश्व के लिए घरेलू निवासियों का पूँजीगत हस्तांतरण। इन लेनदेनों में लेनदारी प्रविष्टि तथा देनदारी प्रविष्टि दोनों हैं, देश की वस्तुओं एवं सेवाओं के निर्यात एवं आयात और वित्तीय पूँजी एवं वित्तीय हस्तांतरण के भुगतान का विवरण रखता है। शेष विश्व से समस्त प्राप्तियाँ लेनदारी के रूप में दर्ज की जाती हैं, जबकि बाकी सभी भुगतान शेष विश्व को देनदारी के रूप में दर्ज की जाती है। आपको ध्यान देना चाहिए कि भुगतान शेष खाता हमेशा संतुलन में रहता है, क्योंकि यह "द्विअंकण बही खाता प्रणाली" द्वारा बनाए रखा जाता है। किसी देश के लिए कोषों का स्रोत अर्थात निर्यात, ऋण तथा निवेश की प्राप्तियाँ लेनदारी मदों में प्रविष्टि किए जाते हैं, जबकि कोषों का उपयोग अर्थात् आयातों अथवा विदेशों में निवेश देनदारी मदों में प्रविष्टि किए जाते हैं। भुगतान शेष में दो भाग शामिल हैं अर्थात् चालू खाता और पूँजी खाता।

3.6.1 चालू खाता

भुगतान शेष का चालू खाता उन सभी लेनदेनों जो वस्तुओं एवं सेवाओं तथा पक्षीय हस्तांतरण से सम्बन्धित है को शामिल करता है। यह वर्तमान में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के भुगतान से सम्बन्धित है।

अतः चालू खाते के शेष को कुल व्यापार शेष, सेवाओं के शेष तथा एकपक्षीय हस्तांतरण के शेष के कुल योग के रूप में आकलित किया जा सकता है।
चालू खाते में शामिल मदें निम्नलिखित हैं:

1) **व्यापार शेष (Balance of Trade)** : यह केवल दृष्य वस्तुओं के निर्यात एवं आयात को शामिल करता है। निर्यात तथा आयात का अन्तर व्यापार शेष प्रदान करता है।

2) **सेवाओं का शेष (Balance of Services)** : यह सभी अदृष्य लेनदेनों जैसे सेवाएँ (यात्रा, बीमा बैंकिंग, समाचार एजेंसी सेवाएँ इत्यादि), सहायता, हस्तांतरण इत्यादि को शामिल करता है।

3) **एकपक्षीय हस्तांतरण (Unilateral Transfers)** : ये लेनदेन एक देश से अन्य देश को बिना किसी वस्तुओं एवं सेवाओं की खरीद जैसे सहायता, उपहार इत्यादित के द्वारा किया जाता है।

3.6.2 पूँजी खाता

यह उन सभी लेनदेनों का विवरण रखता है जो सरकार की सम्पत्ति या देयता में बदलाव का कारण बनते हैं। यह एकदेश तथा शेष विष्व के मध्य सभी पूँजीगत हस्तांतरणों जैसे ऋण तथा निवेश, व्यावसायिक ऋणों को शामिल करता है। यह निम्नलिखित को सम्मलित करता हैः

1) **विदेशी निवेश (Foreign Investment)** : विदेशी निवेश दो प्रकार का होता हैः

   क) **विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (Foreign Direct Investment - FDI)**: इसका अर्थ है विदेशी नागरिकों या संस्थाओं द्वारा परिसम्पत्ति की खरीद तथा उसी समय इसका नियंत्रण प्राप्त करना, और अन्य देशों में एक फर्म द्वारा एक देश में फर्म का अधिग्रहण।

   ख) **प्रतिभूति निवेश (Portfolio Investment)**: यह एक ऐसी परिसम्पत्ति का अधिग्रहण है जो क्रेता को परिसम्पत्ति पर नियंत्रण नहीं देता हे, जैसे विदेशों में शेयरों अथवा ऋणपत्रों (बॉण्ड्स) की खरीद।

2) **ऋ़ण** : यह सभी अल्पावधि एवं दीर्घ अवधि तथा बाह्य व्यावसायिक उधारों (External Commercial Borrowings - ECB) को शामिल करता है।

3) **बैंकिंग पूँजीः** यह विदेशी नागरिकों द्वारा विदेशी करेंसी जमाओं को शामिल करता है।

कुल भुगतान शेष चालू खाता शेष एवं पूँजी खाता शेष के योग द्वारा प्राप्त किया जाता है। एक देश के चालू खाता में घाटा हो सकता है। इस प्रकार के घाटे को पँजी खाते के अतिरिक्त अथवा विदेशी विनिमय कोष में कमी के द्वारा क्षतिपूरित किया जाता है। उसी प्रकार, चालू खाते में अतिरेक को पूँजी खाते में घाटे अथवा विदेशी विनिमय कोष के द्वारा क्षतिपूरित किया जाता है। इस प्रकार लेखांकन दृष्टि से भुगतान शेष हमेशा संतुलन में रहता है।

भारत के भुगतान शेष की संरचना

निम्नलिखित तालिका में हम वर्ष 2018–19 के लिए भारत के भुगतान शेष की प्रवृष्टियों को प्रस्तुत करते हैं ताकि आपको विभिन्न घटकों के बारे में पता चल सकेः

मदें	2018–19 (दस लाख अमरीकी डॉलर में)
I चालू खाता	
1. आयात	517519
2. निर्यात	337237
3. व्यापार शेष (1–2)	– 180283
4. अदृश्य (कुल)	123026
5. चालू खाता शेष	– 257256
II पूँजी खाता	
a) बाह्य सहायता (कुल)	3413
b) बाह्य व्यावसायिक ऋण (कुल)	10416
c) अल्पकालिन ऋण	2021
d) बैंकिंग पूँजी (कुल)	7433
e) विदेशी निवेश (कुल)	30094
f) अन्य पूँजी (कुल)	1026
पूँजी खाता शेष (a+b+c+d+e+f)	54403
III त्रुटि एवं चूक	**– 486**
IV कुल भुगतान	**– 3339**
कुल मौद्रिक संचलन	– 3339

स्रोत: आर्थिक समीक्षा 2019-20

बोध प्रश्न 4

1) भुगतान शेष में शामिल मदें क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

2) व्यापार शेष तथा भुगतान शेष के मध्य अन्तर का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3.7 सार संक्षेप

इस इकाई में हमने सीखा है कि राष्ट्रीय आय को मापने की प्रमुख तीन विधियाँ हैं, अर्थात् आय विधि, व्यय विधि तथा उत्पादन अथवा मूल्य वर्धित विधि है। आय विधि में राष्ट्रीय आय के माप के लिए सभी साधन आय के कुल का योग ध्यान में रखा जाता है।

व्यय विधि एक अवधि के दौरान उत्पादित अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय से सम्बन्धित है। मूल्य वर्धित विधि में, एक अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के द्वारा मूल्य वर्धन को जोड़ा जाता है। राष्ट्रीय आय का मूल्य चाहे वह आय विधि अथवा व्यय विधि अथवा मूल्य वर्धित विधि द्वारा गणना की जाए वह समान होता है।

हमने यह भी चर्चा की है कि बचत, आय का वह भाग है जिसका वर्तमान समय में उपभोग नहीं किया जाता है; बल्कि इसे भविष्य में उपभोग के लिए अलग रखा गया है। बचत के तीन प्रमुख माप हैं: निजी बचत, सरकारी बचत तथा राष्ट्रीय बचत। आर्थिक प्रगति के माप के लिए, हम मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद की अपेक्षा वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद को मूल्य में वृद्धि के लिए पूर्व नियंत्रण के रूप में प्रधानता देते हैं।

बाद में हमने भुगतान शेष पर चर्चा की, जो सभी आर्थिक लेनदेनों का व्यवस्थित विवरण है जो एक देश तथा शेष विश्व के मध्य होता है। भुगतान शेष के दो घटक : चालू खाता तथा पूँजी खाता है। चालू खाता राष्ट्रों के मध्य सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के निर्यात तथा आयात से सम्बन्धित हैं। जबकि पूँजी खाता पूँजी के अंतर्वाह और बहिर्वाह को दिखाता है।

3.9 बोध प्रश्न के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) उपभाग 3.2.1 का संदर्भ देखिए तथा उत्तर दीजिए।
2) आय विधि उत्पादन के साधनों की साधन आय की व्याख्या करती है जबकि व्यय विधि अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं पर किए गए व्यय से सम्बन्धित है। यह उपभाग 3.2.1 तथा 3.2.2 में संदर्भित है।

बोध प्रश्न 2

1) दोहरी गणना की समस्या तब उत्पन्न होती है जब एक से ज्यादा बार लेनदेन किया जाता है। यह उपभाग 3.2.3 में संदर्भित है।
2) इस उपभाग 3.2.2 के अंतर्गत सावधानियों के शीर्षक में संदर्भित है।

बोध प्रश्न 3

1) बचत के तीन माप सार्वजनिक बचत (सरकारी बचत), निजी बचत तथा राष्ट्रीय बचत है। यह भाग 3.3 में संदर्भित है।
2) वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद स्थिर कीमतों अथवा आधार वर्ष की कीमतों पर आधारित होती है जबकि मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद प्रचलित कीमतों पर आधारित किया जाता है। यह भाग 3.3 में संदर्भित है।

बोध प्रश्न 4

1) भुगतान शेष के चालू खाते में व्यापार शेष, सेवाओं का शेष तथा एकपक्षीय भुगतान में शामिल किए जाते हैं। उपभाग 3.6.1 में संदर्भित है।
2) व्यापार शेष दृश्य वस्तुओं के व्यापार को शमिल करता है जबकि भुगतान शेष दृश्य एवं अदृश्य मदों को शामिल करता है। यह भाग 3.6 में संदर्भित है। ।